ISSN (Print): 3048-6459

IEARJ

INTERNATIONAL EDUCATIONAL APPLIED RESEARCH JOURNAL

Peer Reviewed International Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Volume : 02 | Issue : 01 | January 2025

iearjc.com

Editor,
INTERNATIONAL EDUCATIONAL APPLIED RESEARCH JOURNAL
Indore - 452020. (Madhya Pradesh, India)
Email Id : info@iearjc.com | Website : iearjc.com | Contact No : +91-7974455742

INTERNATIONAL EDUCATIONAL APPLIED RESEARCH JOURNAL
PEER REVIEWED JOURNAL- EQUIVENT TO UGC JOURNAL

ISSN (Print) 3048-6459 & ISSN (Online) 2456-6713

Volume: 02 & Issue: 01

Month: January-2025

Starting Year of Publication: 2024

Frequency Year of Publication: Monthly

Format: Print Mode

Subject: Multidisciplinary

Language: Multiple Language (English & Hindi)

Published By:

International Educational applied Research Journal

Publisher's Address:

56, Sarthak vihar, Mirjapur, Indore-452020, and Madhya Pradesh

Printer:

International Educational applied Research Journal

Copyright:

International Educational applied Research Journal

Editor Board		
Editor in Chief		
Name	**Designation**	**Affiliation/Address**
Dr. Deependra Sharma	**Associate Professor**	**GMERS Medical Collage, Valsad, Gujarat Email Id: info@iearjc.com Cont. No.8980038054**
Emeritus Editor		
Name	**Designation**	**Affiliation/Address**
Dr. Prasanna Purohit	**Associate Professor**	**Department of Microbiology and Botany, Dr. A. P. J Abdul Kalam University Indore M.P Email Id: purohit_prasann@yahoo.com Conct. No.: 735401777**

Executive Editor		
Name	**Designation**	**Affiliation/Address**
Dr. Rina Sharma	**Prof & HOD Obs and Gynae**	**Principal Autonomous state medical college, Amethi, U.P E-mail ID: principalgmcamethi@gmail.com**
Dr. Manish Mishra	**Associate Professor Biochemistry**	**Rajarshi Dasharath Autonomous State Medical College, Ayodhya, U.P Conct Number:9452005795,8887858880 Email Id: drmanishreena@gmail.com**
Dr. Pawan Goyal	**Professor and Head Department of Physiology**	**Kiran Medical College, Surat, Gujarat E-mail Id: pawan.goyal@kiranmedicalcpllege.com**
Asst. Editor		
Name	**Designation**	**Affiliation/Address**
Dr. Ashal Shah	**Lecture**	**Department of Pharmacology, GMERS Medical college halarroad, nanakwada, valsad-396001 Gujarat E-Mail Id: aashal_167@yahoo.co.in Conct No. 7990955609**
Dr. Boski Gupta	**Lecturer**	**Department of Dentistry GMERS Medical college, Gandhinagar, Gujarat**

Technical Editor (Language and Reference)		
Name	**Designation**	**Affiliation/Address**
Mitasha Purohit	**Technical Editor**	**Editor Office Indore M.P India**
Vedant Sharma	**Technical Editor**	**Editor Office Indore M.P India**

National Editorial Board		
Name	**Designation**	**Affiliation/Address**
Dr. Amit Jain	**Head R&D**	**Veer pharmachemJhagadia Bharuch Gujarat E-mail ID: amit.jain@veerpharmachem.com Conct. No. 7020692540**
Dr. Jimi B. Hadvaid	**Physician**	**Department of Homoeopathic (Enlisted) Physician, Ahmedabad-380001**
Dr. Deepak Saxena	**Director**	**IIPHG Ga dhinager Gujarat Email ID: director@iiphg.org & ddeepak72@iphg.org**

International Editorial Board		
Name	**Designation**	**Affiliation/Address**
Dr. Sukhprit Purewal	**Medical Laboratory Program Instructor**	**1300 Central Parkway West, Suite 400, Mississauge, ON L5C 4G8 CDAANA E-mail ID: s.purewal@oxfordeduca**
Satya Dev Sharma	**Director of Engineering**	**Address: Director of Engineering IVANTI Utah, USA. E-mail ID: Satyadev.sharma@ivanti.com**
Dr. Prabhjot Singh	**Advisor**	**Advisor, Health Surveillance, Disease Prevention and Control Pan American Health Organization/World Health Organization Office for Barbados, Eastern Caribbean Countries and the French Departments E-mail ID singhpra@paho.org**

Publisher		
Name	**Designation**	**Affiliation/Address**
Mitasha Purohit	**Technical Editor**	**Editor Office Indore M.P India**
Editor Office Address		
56, SarthakVihar, Mirjapur, Indore M.P. PIN-452020		
Conct. No.		
+91-7974455742, 91-8980038054 | E-mail Id: info@iearjc.com		

INDEX

S.no	PAPER TITLE AND AUTHOR NAME	Page no.
1.	ग्वालियर के आर्थिक विकास का भौगोलिक अध्ययन (2011–2021)	1-15
2.	**Effect of Agricultural Financing on Agricultural Output Growth in Nigeria (1980-2022)**	16-34
3.	"पर्यटन और स्थानीय संस्कृति का संरक्षण:–मध्य प्रदेश के बड़वानी जिले के संदर्भ में"	35-40
4.	स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर योगाभ्यास के प्रभाव का अध्ययन	41-48
5.	**Digital Marketing in India: Balancing Data Privacy with Innovation and Cybersecurity**	49-57

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

ग्वालियर के आर्थिक विकास का भौगोलिक अध्ययन (2011–2021)

[1]रूचि धाकड

[1]शोधार्थी, के.आर.जी. कॉलेज ग्वालियर

[2]डॉ. रंजना दीक्षित

[2]सेवानिवृत्त सहा.प्राध्यापक (भूगोल),माधव महाविद्यालय, ग्वालियर

[3]डॉ. शैलेन्द्र सिंह तोमर

[3]विभागाध्यक्ष (भूगोल), के.आर.जी. कॉलेज ग्वालियर

Paper Rcevied date

05/01/2025

Paper date Publishing Date

14/01/2025

DOI

. https://doi.org/10.5281/zenodo.14641219

शोध–सार

वर्तमान में आर्थिक विकास एक व्यापक अवधारणा है। आर्थिक विकास में कृषि एवं औद्योगिक विकास के साथ–साथ मानव संसाधनों का विकास भी सम्मिलित है। समुचित एवं वास्तविक आर्थिक विकास हेतु यह अति आवश्यक है कि मानव संसाधनों के सही उपयोग पर ध्यान दिया जाय, जिससे संसाधनों का उचित दोहन भी हो सके एवं श्रम, पूँजी व प्रबन्ध में सौहार्द्रपूर्ण सम्बन्ध भी बना रहे। विकासशील एवं अल्प विकसित देशों में कृषि के बिना आर्थिक विकास की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। कृषि और उद्योग धन्धों का भारत में गहन सम्बन्ध है यदि यह कहा जाय कि कृषि और उद्योग धन्धे एक दूसरे पर निर्भर हैं तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

प्रस्तुत शोध–पत्र का मुख्य उद्देश्य ग्वालियर के आर्थिक विकास का भौगोलिक अध्ययन करना है। ग्वालियर धीरे–धीरे विकासशील नगर से विकसित नगर बनता जा रहा है क्योंकि यहाँ की आर्थिक स्थिति में लगातार सुधार हो रहा है। इसका प्रमुख कारण ग्वालियर नगर में पिछले कई वर्षों से कृषि की उन्नति के साथ–साथ रोजगार एवं व्यवसाय के नवीन अवसर प्रदान हो रहे हैं। व्यवसायिक गतिविधियाँ नगर में बढ़ गई हैं। उद्योग धन्धों के साथ–साथ मॉल संस्कृति ने जनमानस को अपनी ओर आकर्षित किया है। आर्थिक रूप से ग्वालियर अब नये आयाम छू रहा है।

मूल शब्द : आर्थिक विकास, यातायात, अवसंरचनात्मक विकास, शिक्षा, रोजगार, मानव संसाधन।

IMPACT FACTOR

5.924

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

प्रस्तावना :

स्वतंत्रता के पश्चात् ग्वालियर का औद्योगिक विकास तेजी के साथ हुआ, औद्योगिक विकास के साथ ही अर्थव्यवस्था भी मजबूत हुई। औद्योगिक विकास के कारण ही ग्वालियर में रोजगार, उत्पादन एवं निर्यात में उल्लेखनीय वृद्धि हुई जिससे ग्वालियर की अर्थव्यवस्था सशक्त हुई। कुछ दशक पहले ग्वालियर के जे.सी. मिल, स्टील फाउण्ड्री, सिमको एवं रेयन ने केवल भारत में ही नहीं बल्कि विश्व में अपना कीर्तिमान स्थापित किया। उच्च औद्योगिक स्तर वाले क्षेत्रों में व्यक्तियों का जीवन स्तर अनेक सुविधाओं के उपलब्ध होने के कारण उच्चतर रहता है। निश्चित रूप से किसी क्षेत्र के आर्थिक विकास में शिक्षित–प्रशिक्षित श्रम, नवीन वैज्ञानिक तकनीक, यातायात एवं संचार के साधन, उद्योग–धन्धे, प्रबन्धन एवं सरकारी नीतियों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है। ग्वालियर का सौभाग्य रहा कि उसे उक्त सभी उपलब्ध रहा, इसीलिए ग्वालियर का आर्थिक विकास आसानी से हो सका। प्रस्तुत शोध 'ग्वालियर के आर्थिक विकास का भौगोलिक अध्ययन' ग्वालियर की अर्थव्यवस्था का भौगोलिक अध्ययन करना है।

अध्ययन के उद्देश्य

- ग्वालियर के आर्थिक विकास का अध्ययन करना।
- ग्वालियर के उद्योग–धन्धों का अध्ययन करना।
- ग्वालियर के यातायात के साधनों एवं रोजगार के साधनों का अध्ययन करना।
- ग्वालियर के अस्पताल, शिक्षा केन्द्र, सड़क, रेल, स्मार्ट सिटी परियोजना का अध्ययन करना।

अध्ययन तकनीक

उक्त शोध–पत्र में द्वितीयक आँकड़ों का प्रयोग किया गया है जिन्हें ग्वालियर जिले के विभिन्न शासकीय कार्यालयों एवं जिला सांख्यिकी पुस्तिकाओं से प्राप्त किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

ग्वालियर शहर मध्यप्रदेश के उत्तरी भाग में स्थित है। ग्वालियर को महर्षि 'गालव ऋषि की तपोभूमि' के नाम से जाना जाता है, ऐसा भी कहा जाता है कि गालव ऋषि या ग्वालियापा ऋषि के नाम पर ही इस स्थान का नाम ग्वालियर पड़ा। संगीत सम्राट तानसेन की जन्म स्थली भी ग्वालियर क्षेत्र में आती है और

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

ग्वालियर तानसेन की साधना स्थली होने के कारण ग्वालियर को 'तानसेन की नगरी' कहा जाता है। ग्वालियर मध्यप्रदेश राज्य के उत्तरी भाग $26^0$13' उत्तरी अक्षांश एवं $78^0$18' पूर्वी देशांतर पर स्थित है। यह समुद्रतल से 212 मीटर की औसत ऊँचाई पर स्थित है। ग्वालियर शहर तीन प्रमुख उपनगरों से मिलकर बना है, जिसमें उत्तर दिशा में प्राचीन ग्वालियर, पूर्व दिशा में मुरार एवं दक्षिण दिशा में लश्कर स्थित है। ग्वालियर नगर स्वतंत्रता के पश्चात् मध्यभारत राज्य की राजधानी भी रहा है। ग्वालियर को भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय राजधानी के काउण्टर मैगनेट के रूप में विकसित करने हेतु भी चयनित किया गया है।

ग्वालियर जिले में तीन तहसील ग्वालियर (गिर्द), डबरा एवं भितरवार हैं। इसमें चार विकासखण्ड हैं : मुरार, डबरा, भितरवार, घाटीगाँव (बरई)। जिले में तीन नगर पंचायत बिलौआ, पिछोर एवं आँतरी हैं। जिले में दो नगर पालिका डबरा एवं भितरवर तथा एक नगर निगम ग्वालियर अवस्थित है।

सारणी क्रमांक–1

ग्वालियर जिले की अक्षांशीय स्थिति एवं उच्चावच

क्रमांक	जिला / विकासखण्ड	उत्तरी अक्षांश विस्तार	पूर्वी देशांतर विस्तार	समुद्रतल से ऊँचाई (मी.)
1	जिला ग्वालियर	25^0 43'–26^0 21'	77^0 40'–78^0 39'	205–212
2	मुरार	26^0 04'–26^0 21'	78^0 06'–78^0 38'	212
3	डबरा	25^0 47'–26^0 08'	78^0 08'–78^0 39'	205
4	घाटीगाँव	25^0 47'–26^0 21'	77^0 40'–78^0 10'	212
5	भितरवार	25^0 43'–26^0 06'	77^0 52'–78^0 16'	206

स्रोत : जिला सांख्यिकी पुस्तिका ग्वालियर 2016, पृ. क्र. 06

सारणी क्रमांक–2

ग्वालियर संभाग में जनसंख्या विवरण एवं लिंगानुपात

क्रमांक	जिला	कुल जनसंख्या (2011)	पुरूष	महिला	लिंगानुपात
1	ग्वालियर	2032036	1090327	941709	864

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

2	दतिया	786754	420157	366597	873
3	शिवपुरी	1725050	919795	806255	877
4	गुना	1241519	649362	592157	912
5	अशोकनगर	845071	443837	401234	904

स्रोत : भारत की जनगणना 2011, जिला सांख्यिकी पुस्तिका (ग्वालियर, दतिया, शिवपुरी, गुना, अशोकनगर)

उच्चावच

ग्वालियर संभाग का अधिकांश भाग पठार एवं ऊबड़–खाबड़ है। समुद्रतल से ग्वालियर की ऊँचाइ 300 मीटर से 500 मीटर तक है। ग्वालियर पठारी एवं मैदानी भागों में बँटा हुआ है। ग्वालियर जिले को उच्चावच की दृष्टि से तीन भागों में विभक्त किया गया है – मैदानी भाग, मध्यवर्ती पठारी भाग एवं पश्चिमी पठारी भाग। निम्न तालिका के माध्यम से ग्वालियर की अक्षांशीय स्थिति एवं उच्चावचों को प्रदर्शित किया गया है –

अपवाह तंत्र

ग्वालियर जिले के अपवाह तंत्र को दो भागों में विभाजित किया गया है, उत्तरी अपवाह तंत्र और दक्षिणी अपवाह तंत्र। उत्तरी अपवाह तंत्र में सांक, स्वर्ण रेखा, मुरार, सोन, वैशाली, आसन नदियाँ आतीं हैं। दक्षिणी अपवाह तंत्र में पार्वती, छछूंद, नून, सिंध नदियाँ आतीं हैं।

जलवायु

ग्वालियर की जलवायु मूलतः महाद्वीपीय है। यहाँ की जलवायु में स्थानीय पवनों की अधिकता, ताप परिसर की अधिकता, वायु की शुष्कता, वर्षा की न्यूनता आदि विशेषताएँ हैं। यहाँ ग्रीष्म, वर्षा एवं शीत तीनों ऋतुएँ पाई जातीं हैं।

स्थानीय मिट्टी

यहाँ पर काली, जलोढ़, छिछली, लाल–पीली मिश्रित मिट्टी पाई जाती है। जिले के पूर्वी भाग बुन्देलखण्ड में भार, काबर, पडुआ सकर, कछार एवं मोरम प्रकार की स्थानीय मिट्टी पाई जाती है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

ग्वालियर की आर्थिक पृष्ठभूमि

ग्वालियर की अर्थव्यवस्था सशक्त है। ग्वालियर का सकल घरेलू उत्पाद 33.08 करोड़ (2020–21) है। कृषि उद्योग, परिवहन एवं संचार के साधन आर्थिक व्यवस्था के मुख्य आधार होते हैं। ग्वालियर में उक्त साधनों की पर्याप्त व्यवस्था है जो आर्थिक विकास में सराहनीय कार्य कर रहे हैं।

सारणी क्रमांक–3

ग्वालियर जिले का सकल घरेलू उत्पाद (GDP) एवं प्रति व्यक्ति आय (PCI) प्रचलित भावों पर

वर्ष	GDP	वृद्धि	PCI	वृद्धि
2011–12	11,402	–	49,289	–
2012–13	13,307	1,905	54,906	5,617
2013–14	15,727	2,420	65,303	10,397
2014–15	16,223	496	66,333	1,030
2015–16	18,405	2,182	75,003	8,670
2016–17	21,129	2,724	85,307	10,304
2017–18	22,604	1,475	89,756	4,449
2018–19	27,656	5,052	1,08,826	19,070
2019–20 (P)	31,229	3,573	1,21,274	12,448
2020–21 (Q)	33,084	1,855	1,25,351	4,077

P = Provisional (प्राविधिक), Q = Quick (त्वरित)

स्रोत : मध्यप्रदेश जिला घरेलू उत्पाद के अनुमान 2011–12 से 2020–21, आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय, मध्यप्रदेश।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

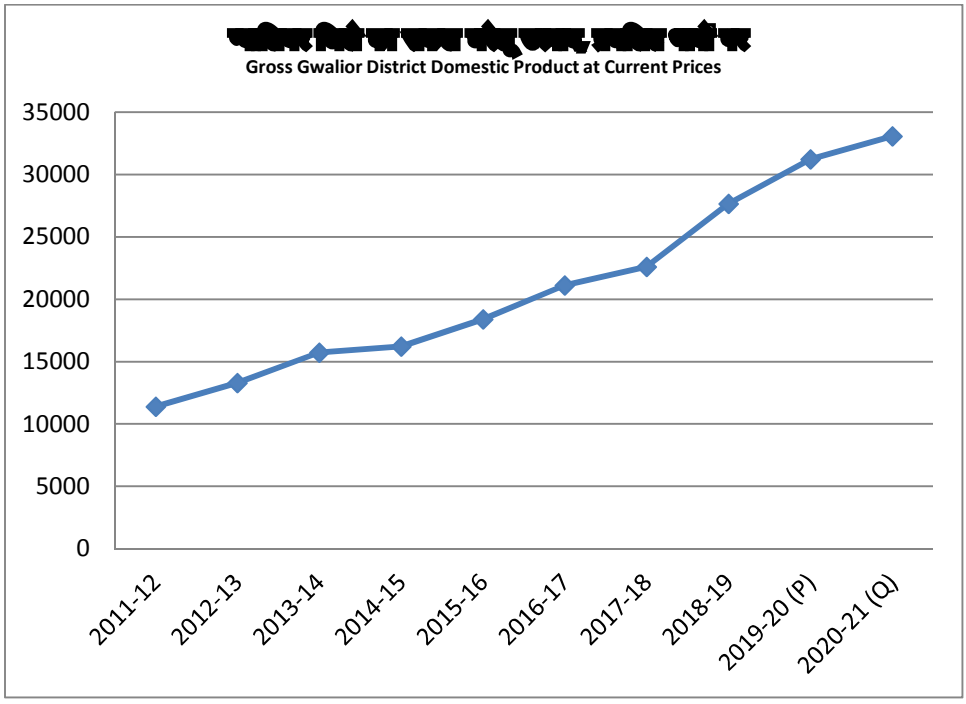

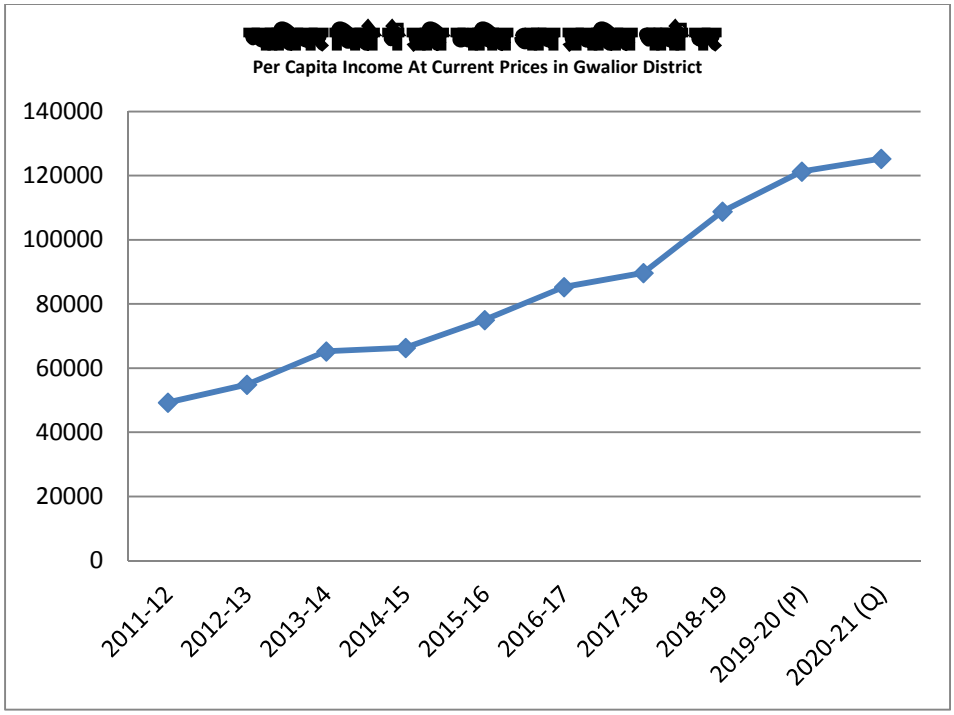

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

सारणी क्रमांक–4

सकल मूल्य वर्धन, प्रचलित भावों पर (लाख रूपयों में)

विवरण	2011–12	2015–16	2020–21
विनिर्माण	155791	144810	306865
बिजली, गैस, जलापूर्ति और अन्य उपयोगी सेवाएँ	32500	25704	105865
निर्माण	166234	159906	297680
व्यापार, होटल, मरम्मत, जलपान गृह (Restaurant)	159498	187941	379614
परिवहन एवं भण्डारण	56238	65946	109406
रेलवे	13408	17903	30391
संचार एवं प्रसारण संबंधित सेवाएँ	27157	38758	72269
वित्तीय सेवाएँ	89589	19215	187175

स्रोत : मध्यप्रदेश जिला घरेलू उत्पाद के अनुमान 2011–12 से 2020–21, आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय, मध्यप्रदेश।

1. कृषि

प्राचीनकाल से ही कृषि ग्वालियर क्षेत्र की अर्थव्यवस्था का प्रमुख स्रोत रहा है। इस क्षेत्र में मनुष्य द्वारा अपनाए गए उद्यमों में कृषि सर्वाधिक प्राचीन एवं महत्त्वपूर्ण क्रिया है। कृषि के अन्तर्गत मुख्यतः तीन क्रियाएँ आतीं हैं– फसल उत्पादन, फल उत्पादन एवं पशुपालन। मध्यप्रदेश एवं ग्वालियर में कृषि जीवन आधार है, इसका अर्थव्यवस्था में महत्त्वपूर्ण योगदान है। संभाग में भूमि उपयोग के आँकड़ों से पता चलता है कि ग्वालियर संभाग में 12.35% क्षेत्र पर वनों का विस्तार है, 14.20% अकृष्य भूमि, 3.80% अन्य अकृष्य भूमि, 8. 81% कृषि योग्य बंजर भूमि, 5.94% परती भूमि एवं 55.52% शुद्ध बोई जाने वाली कृषि भूमि है।

सारणी क्रमांक–5

ग्वालियर जिले में गेहूँ एवं धान उत्पादन (मैट्रिक टन में)

फसल उत्पादन	2017–18	2018–19	2019–20
गेहूँ	247260	523109	655595
धान	39453	254297	419708

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

स्रोत : आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश रोड मेप 2023 के संदर्भ में प्रमुख फसलों का जिलेवार उत्पादन और उपभोग विश्लेषण वर्ष 2017–18 से 2019–2020 तक, आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय मध्यप्रदेश।

सारणी क्रमांक–6

सकल मूल्य वर्धन, प्रचलित भावों पर (लाख रूपयों में)

विवरण	2011–12	2015–16	2020–21
प्राथमिक क्षेत्र	159583	297904	883504
द्वितीयक क्षेत्र	354526	463549	709840
तृतीयक क्षेत्र	583155	967163	1534509

स्रोत : मध्यप्रदेश जिला घरेलू उत्पाद के अनुमान 2011–12 से 2020–21, आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय, मध्यप्रदेश।

कृषि विकास में जनसंख्या एक सहायक एवं महत्त्वपूर्ण तत्त्व है लेकिन बढ़ती जनसंख्या कृषि पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है। ग्वालियर संभाग की 1961 की जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या 2012122 व्यक्ति थी जो 2011 की जनगणना के अनुसार 6628655 व्यक्ति हो गई है लेकिन संभाग का भौगोलिक क्षेत्र वही 28784 वर्ग कि.मी. था। अतः 1961 में 100 व्यक्तियों के लिए 1.43 वर्ग कि.मी. भूमि थी जो 2011 में घटकर 0.43 वर्ग कि.मी. ही रह गई। यह स्पष्ट करता है कि जनसंख्या वृद्धि से कृषि भूमि एवं विकास पर ऋणात्मक प्रभाव पड़ता है। ग्वालियर में कुल कार्यशील जनसंख्या का 70.2% भाग कृषि कार्य में संलग्न है। संभाग में लगभग 69.62% क्षेत्र पर कृषि होती है।

सारणी क्रमांक–7

ग्वालियर में भूमि उत्पादन क्षेत्र

वर्ष	Area (क्षेत्र) '000' Ha	Product (उत्पादन) '000' MT	Yield (उत्पाद) Kg/Ha
2015–16	53	225	4245
2014–15	49	167	3333
2013–14	57	246	4311

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

2012–13	49	89	1915
2011–12	31	96	3310

स्रोत : **Estimates district Domestic Production M.P.**

2. उद्योग धन्धे

ग्वालियर में कई उद्योगों की स्थापना की गई है। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व भी ग्वालियर में सन् 1922–23 एवं 1931–32 में दो सूती वस्त्र उद्योग स्थापित किए गए थे। लघु उद्योगों में ग्वालियर का माचिस उद्योग उल्लेखनीय है। 1941–42 में डबरा (ग्वालियर) में चीनी उद्योग की स्थापना की गई। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद ग्वालियर में कपड़ा, शक्कर, रेशमी वस्त्र, चमड़ा आदि के उद्योग स्थापित किए गए।

सन् 1977 में स्टील स्टॉक यार्ड की स्थापना की गई। ग्वालियर में 2 अप्रैल 1979 को जिला उद्योग केन्द्र की स्थापना की गई। वर्ष 2005–06 की स्थिति के अनुसार ग्वालियर संभाग में 1280 उद्योग धन्धे केन्द्रित हैं जिनमें से 2 बड़े, 4 मध्यम और 1274 लघु उद्योग हैं। **सारणी क्रमांक–8**

ग्वालियर जिले औद्योगिक क्षेत्रों की विद्यमान स्थिति

क्र. सं.	औद्योगिक क्षेत्र का नाम	अधिग्रहित भूमि (हेक्टे. में)	विकसित भूमि (हेक्टे. में	प्रचलित दर प्रति वर्गमीटर (रूपये में)	भूखंडों की संख्या	आवंटित भूखंडों की संख्या	खाली भूखंडों की संख्या	उत्पादनरत इकाइयों की संख्या
1	पुराना औद्योगिक क्षेत्र, बिड़ला नगर	265.16	265.16	20 रू. के लिए एसएसआई 40 रू. के लिए एलएमई	68	68	शून्य	65
2	औद्योगिक क्षेत्र गोसपुरा		125.95	20 रू. के लिए एसएसआई 40 रू. के लिए एलएमई	96	–	शून्य	11
3	औद्योगिक क्षेत्र बिड़ला नगर	125.95	6.68	20 रू. के लिए एसएसआई 40 रू. के लिए एलएमई	35	35	शून्य	78
4	औद्योगिक क्षेत्र बाराघाटा		25.13	20 रू. के लिए एसएसआई 40 रू. के लिए एलएमई	62	62	शून्य	81
5	औद्योगिक क्षेत्र महाराजपुरा	6.68	40.9	20 रू. के लिए एसएसआई 40 रू. के लिए एलएमई	66	66	शून्य	135

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

6	औद्योगिक क्षेत्र बरई	5.02	5.02	20 रू. के लिए एसएसआई 40 रू. के लिए एलएमई	127	127	शून्य	–
7	औद्योगिक क्षेत्र बिल्लौआ	25.13	–	20 रू. के लिए एसएसआई 40 रू. के लिए एलएमई	75	शून्य	75	–
8	औद्योगिक क्षेत्र बरई चिरवाई	3.646	3.646	20 रू. के लिए एसएसआई 40 रू. के लिए एलएमई	127	27	शून्य	–
	कुल	**492.2**	**472.49**	**20 रू. के लिए एसएसआई 40 रू. के लिए एलएमई**	**556**	**385**	**75**	**370**

स्रोत : DTIC, Gwalior.

3. यातायात

ग्वालियर में यातायात हेतु सड़क मार्ग, रेल मार्ग एवं वायु मार्ग उपलब्ध हैं, लेकिन सड़क यातायात ही मुख्यतः नगर की यातायात संरचना को प्रभावित करता है। विगत दशकों में ग्वालियर में वाहनों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हुई है। इसके परिणाम स्वरूप यातायात, परिवहन एवं पार्किंग संबंधी समस्याएँ परिलक्षित हो रहीं हैं। वर्ष 2020 में ग्वालियर में पंजीकृत वाहन 66612 थे।

सारणी क्रमांक–9

वाहन वृद्धि

Year	Two Wheeler	Four Wheeler	Goods Vehicle	Trucks	Other Vehicle	Total
2016–17	34593	6168	1553	1209	889	44412
2017–18	41274	7636	1970	2008	1042	53930
2018–19	46331	9285	2551	2779	1268	62214
2019–20	47353	12044	2592	3279	1344	66612
2020–21	33824	10266	1536	813	2188	48627

स्रोत : मध्यप्रदेश राजपत्र दिनांक 15 अक्टूबर 2021, ग्वालियर विकास योजना–2035 (प्रारूप)

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

4. शैक्षणिक व्यवस्था

किसी देश एवं क्षेत्र के विकास में शिक्षा का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। ग्वालियर उच्च शिक्षा का केन्द्र है। यहाँ पर राष्ट्रीय स्तर के शैक्षणिक संस्थान हैं। प्रमुख शैक्षणिक संस्थानों में अटल बिहारी राष्ट्रीय सूचना प्रौद्योगिकी एवं प्रशिक्षण संस्थान, लक्ष्मीबाई राष्ट्रीय शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय, सिंधिया फोर्ट स्कूल, जीवाजी विश्वविद्यालय, कृषि विश्वविद्यालय, राजा मानसिंह तानसेन संगीत विश्वविद्यालय आदि। नगर की स्थानीय शिक्षा आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु ग्वालियर में निम्नानुसार शैक्षणिक सुविधाएँ उपलब्ध हैं –

सारणी क्रमांक–10

शैक्षणिक संस्थान विवरण

स.क्र.	शैक्षणिक संस्थान	संख्या
1.	विद्यालय (प्राथमिक / माध्यमिक / उच्चतर)	435
2.	महाविद्यालय	114
3.	विश्वविद्यालय (डीम्ड विश्वविद्यालयों सहित)	09

5. स्वास्थ्य सुविधाएँ

स्वास्थ्य सुविधाओं के अभाव में आर्थिक विकास अधूरा ही माना जायेगा। ग्वालियर में स्वास्थ्य सुविधाएँ पर्याप्त हैं। ग्वालियर में मेडीकल कॉलेज, जयारोग्य अस्पताल, माधव डिस्पेंसरी, मुरार जिला अस्पताल, मुरार प्रसूति गृह सहित कुल 24 शासकीय अस्पताल एवं 152 से अधिक निजी अस्पताल / नर्सिंगहोम हैं। यह वर्तमान आबादी की स्वास्थ्य आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु पर्याप्त हैं।

6. प्रशासनिक व्यवस्था

ग्वालियर नगर ग्वालियर संभाग का मुख्यालय है अतः यहाँ पर अनेक संभागीय कार्यालय हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ पर कुछ राज्य स्तरीय कार्यालय भी संचालित होते हैं जिनमें आयुक्त भू–अभिलेख एवं बंदोबस्त, आयुक्त ट्रांसपोर्ट एवं आयुक्त आबकारी, राजस्व मण्डल, महालेखाकार मध्यप्रदेश प्रमुख हैं।

7. आवासीय व्यवस्था

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

2011 की जनगणना के अनुसार ग्वालियर नगर में 1,89,156 आवासों में 2,31,924 परिवार निवास करते हैं। नगर में लगभग 42,768 आवासीय इकाइयों की कमी है। ग्वालियर विकास योजना 2035 में अनुमानित जनसंख्या 24 लाख के लिए परिवार आकार 5 व्यक्ति के आधार पर आवासीय इकाइयों का अनुमान लगाया गया है जिसका विवरण निम्न है –

सारणी क्रमांक–11

परिवार एवं आवास आवश्यकताएँ

क्रमांक	विवरण	2011	2035 (अनुमानित)
1	जनसंख्या (लाख में)	12,48,604	24,00,000
2	औसत परिवार आकार	5.38	5.00
3	परिवारों की संख्या	2,31,924	4,80,000
4	आवास उपलब्धता	1,89,156	–
5	आवास कमी	42,768	–
6	2035 के लिए अत्यधिक आवास आवश्यकताएँ	–	2,90,44

स्रोत : नगर तथा ग्राम निवेश, मध्यप्रदेश राजपत्र, दिनांक 15 अक्टूबर 2021, ग्वालियर विकास योजना 2023

प्रधानमंत्री आवास योजना (PMAY) भारत सरकार की एक योजना है जिसके माध्यम से नगरों व ग्रामीण इलाकों में रहने वाले निर्धन लोगों को उनकी क्रय शक्ति के अनुकूल घर प्रदान किये जाते हैं। ग्वालियर नगर निगम में इस योजना के तहत 16200 लोगों को लाभ मिलने का लक्ष्य रखा गया है जोकि सकारात्मक पहल है जिसके अन्तर्गत 2000 फ्लेटों के निर्माण का प्रस्ताव है।

प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत शहर में मानपुर साइट पर कम कीमत वाले 912 आवास बनाए जा रहे हैं, इनके लिये अभी तक केन्द्र सरकार द्वारा 1.50 लाख रूपये का अनुदान दिया जा रहा है इसलिए उक्त आवास 7 लाख रूपये में मिल रहा था किन्तु अब यह आवास 1.50 लाख रूपये का अनुदान और मिलने पर अब केवल 5.50 लाख रूपये में ही उपलब्ध हो जायेगा। कुल मिलाकर कम कीमत वाले आवास में 3 लाख रूपये का अनुदान गरीब लोगों को मिलेगा।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

8. संचार एवं विद्युत व्यवस्था

संचार का अर्थव्यवस्था में महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। ग्वालियर में अन्तर्राष्ट्रीय गेट–वे सुविधा के विस्तार के साथ आई.टी. पार्क भी उपलब्ध है, इसके लिए प्रशिक्षित मानव शक्ति के स्रोतों के रूप में सूचना प्रौद्योगिकी एवं प्रबंध संस्थान तथा अनेक इंजीनियरिंग कॉलेज उपलब्ध हैं। ग्वालियर नगर में दूर संचार अधोसंरचना में टेलीफोन केन्द्र एवं ओ.एफ.सी. (Optical Fibre Cable) का विकास भारतीय दूर संचार निगम के साथ जियो, एयरटेल आदि निजी कम्पनियों द्वारा किया गया है। मोबाइल कम्पनियों द्वारा टॉवर लगाए जाकर मोबाइल टेलीफोन सेवा उपलब्ध कराई जा रही है। इसके साथ ही ग्वालियर में विद्युत व्यवस्था भी पर्याप्त है।

9. स्मार्ट सिटी परियोजना के तहत सुधार

मध्यप्रदेश के ग्वालियर शहर में स्मार्ट सिटी पहल को दो प्रमुख रणनीतियों के माध्यम से क्रियान्वित किया गया : क्षेत्र आधारित विकास (एबीडी) दृष्टिकोण और पैन–सिटी दृष्टिकोण। एबीडी रणनीति में रेट्रोफिटिंग, पुनर्विकास और ग्रीनफील्ड विकास शामिल था, जो व्यापक वृद्धि के लिए विशिष्ट क्षेत्रों को लक्षित करता था। एबीडी रणनीति के तहत, ग्वालियर के परियोजना मॉड्यूल ने विरासत और संस्कृति को संरक्षित करने, केवल पैदल यात्री क्षेत्रों और बुद्धिमान यातायात प्रणालियों के साथ गतिशीलता बढ़ाने और उन्नत पार्कों और खेल मैदानों के माध्यम से सामाजिक पहलुओं को बढ़ाने पर ध्यान केन्द्रित किया।

स्मार्ट सिटी मिशन के तहत ग्वालियर शहर में विभिन्न जंक्शनों को सुन्दर व सुरक्षित बनाने के उद्देश्य से उन्नयनीकरण का कार्य किया जा रहा है। इस परियोजना के अंतर्गत प्रथम चरण में ग्वालियर शहर के मुख्य जंक्शन तानसेन चौराहा, हजीरा व उरवाई गेट जंक्शन का उन्नयनीकरण किया जा रहा है।

10. बैंकिंग सुविधाएँ

ग्वालियर में बैंकिंग सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यहाँ पर सरकारी, सहकारी एवं निजी बैंकों की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। प्रमुख बैंकों में– पंजाब नेशनल बैंक, बैंक ऑफ इण्डिया, बैंक ऑफ बड़ौदा, बैंक ऑफ महाराष्ट्र, स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, यूको बैंक, यूनियन बैंक, यूनाइटेड बैंक ऑफ इण्डिया, विजया बैंक, सिंडीकेट बैंक आदि बैंक हैं। जिले में 253 बैंक शाखा का नेट वर्क है जिसमें वाणिज्य बैंक, सेन्ट्रल मध्यप्रदेश ग्रामीण बैंक, जिला सहकारी बैंक की क्रमशः 223, 17, 13, शाखाएँ हैं, इनके अलावा ग्वालियर जिले में 76 प्राथमिक कृषि समितियाँ भी कार्यरत हैं। ग्वालियर केन्द्रीय सहकारी बैंक को लाइसेन्स मिला हुआ है और सीबीएस लागू होने

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

से बैंक द्वारा एन ई एफ टी/ आर टी जी एस सेवाएँ दी जा रहीं हैं। ग्राहकों को डेबिट कार्ड और किसान कार्ड जारी करने का कार्य प्रगति पर है।

निष्कर्ष

ग्वालियर शहर में बड़े पैमाने पर आर्थिक विकास हुआ है, जिसके परिणामस्वरूप ग्वालियर की सूरत व सीरत दोनों ही बदले हैं। ग्वालियर की देश के प्रमुख शहरों में गिनती होती है क्योंकि ग्वालियर आर्थिक विकास की तेज गति से विकसित हुआ है। ग्वालियर के उद्योग धन्धे क्षेत्रीय जनता को रोजगार देने में सहयोगी हैं किन्तु बढ़ती जनसंख्या के लिए पर्याप्त नहीं है। राज्य सरकार एवं केन्द्र सरकार दोनों ही ग्वालियर के विकास हेतु अग्रसर हैं। राज्य सरकार द्वारा शहर के विकास हेतु सड़क, पानी, बिजली, संचार आदि के लिए सभी आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराए जा रहे हैं। स्मार्ट सिटी के अन्तर्गत नवीन पुलों का निर्माण, सड़कों का निर्माण किया जा रहा है। नगर का सौन्दर्यीकरण कर रेलवे स्टेशन को भव्य एवं आकर्षक रूप देने की तैयारी है। ग्वालियर नगर को स्मार्ट सिटी एवं अमृत योजना में चयनित किया गया है। ग्वालियर विकास योजना 2035 में सुदूर संवेदन एवं जी.आई.एस. तकनीक का उपयोग कर ग्वालियर का विकास किया जाना प्रस्तावित है।

सुझाव

- राज्य सरकार को ग्वालियर के और अधिक आर्थिक विकास हेतु नई योजनाएँ बनाकर व्यवसाइयों को उद्योग के लिए आमंत्रित करना चाहिए।
- शासकीय विकास योजनाओं के संचालन में पारदर्शिता होनी चाहिए।
- ग्वालियर जिला उद्योग केन्द्र द्वारा स्वरोजगार हेतु चलाई जा रहीं योजनाओं की जानकारी आम नागरिक तक पहुँचाई जाना चाहिए।
- ग्वालियर में बन्द पड़े उद्योगों का पुनः संचालन होना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

1. डॉ. प्रमिला कुमार एवं डॉ. श्रीकमल शर्मा (2010), मध्यप्रदेश एक भौगोलिक अध्ययन, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल।
2. तिवारी रामकुमार (2017), जनसंख्या भूगोल, प्रवालिका प्रकाशन।
3. राव, बी.सी. (2016), आर्थिक भूगोल, वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर।
4. सिंह एण्ड सिंह जगदीश (2013), आर्थिक भूगोल के मूल तत्त्व, राधा प्रकाशन दिल्ली।
5. जिला जनगणना प्रतिवेदन–2011 (ग्वालियर)।
6. माहेश्वरी, एच.बी. जैसल (ग्वालियर इतिहास, संस्कृति एवं पर्यटन)।
7. ग्वालियर विकास योजना '' नियोजना प्रस्ताव'' 2004
8. मध्यप्रदेश राजपत्र दिनांक 15 अक्टूबर 2021, ग्वालियर विकास योजना–2035 (प्रारूप)
9. मजुपुरिया, संजय, ग्वालियर इतिहास और उसके दर्शनीय स्थल।
10. बघेल, डी.एस. (2009), औद्योगिक समाजशास्त्र, विवेक प्रकाशन दिल्ली।
11. Brief Instustrial Profile of Gwalior District, Ministry of MSME, Government of India.
12. NFHS – 04 (2015-16), NFHS (2019-21).
13. National family health survey (NFHS-5).
14. Indicator (Madhya Pradesh (NHSRC).
15. मध्यप्रदेश जिला घरेलू उत्पाद के अनुमान (2011–12 से 2020–21). आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय, मध्यप्रदेश।
16. आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश रोडमैप 2023 के संदर्भ में प्रमुख फसलों का जिलेवार उत्पादन और उपभोग विश्लेषण (वर्ष 2017–18 से 2019–20 तक), आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय, मध्यप्रदेश।
17. ग्वालियर विकास योजना पुस्तक–2021.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Effect of Agricultural Financing on Agricultural Output Growth in Nigeria (1980-2022)

http://iearjc.com/wp-content/uploads/2025/01/02-JAN-2025-Copy.pdf

[1]Ojo, O. A.

[1]Agricultural Economics Department, Ladoke Akintola University of Technology, Ogbomoso, Oyo State, Nigeria.

[2] Adeleke, O. A.

[2]Agricultural Economics Department, Ladoke Akintola University of Technology, Ogbomoso, Oyo State, Nigeria.

[3]Adeleke, H. M.

[3]Agricultural Economics Department, Ladoke Akintola University of Technology, Ogbomoso, Oyo State, Nigeria.

Paper Rcevied date

05/01/2025

Paper date Publishing Date

14/01/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.14735510

ABSTRACT

Agricultural financing through government assisted programs and credits catalyzes the process of agricultural production and productivity. The poor performance of agricultural sector in Nigeria's economy with its resultant food shortages and high food prices over the years has been aptly attributed to the inadequate capital to finance agricultural investments. The study examined the effects of agricultural financing on the growth of agricultural output in Nigeria.

The study made use of time series data from CBN Statistical Bulletin and World Development Indicators. The dependent variable is the agricultural output growth while government agricultural expenditure, agricultural credit guarantee scheme funds, commercial banks credits to the agricultural sector and interest rates on loans to the agricultural sector were the independent variables. The methods of analyses were the descriptive statistics for describing the trends and patterns of the independent variables, unit root tests (URT) for ascertaining the stationarity of the variables, Autoregressive distributive lag (ARDL) for the estimation of the long-run relationship between the variables, Error Correction Model (ECM) for estimating the short-run relationship between the variables as well as the post-estimation tests to ascertain the stability of the series residuals. Granger Causality was used to analyze the causal relationships that existed among the variables.

The findings of the study revealed that only agricultural output growth (AOG) and government agricultural expenditure (GAEX) were stationary at levels (1(0)) while agricultural credit guarantee scheme funds (ACGSF), commercial banks loans to the agricultural sector (CBCA) and interest rates on loans to the agricultural sector (INTR) were stationary at first difference (1(1)). The study also revealed that government agricultural expenditure (GAEX), commercial banks credit to the agricultural sector (CBCA) and interest rates on loans to the agricultural sector (INTR) have significant positive long-run relationship (p-value of 0. 0067, 0.0037 and 0.0013) with

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

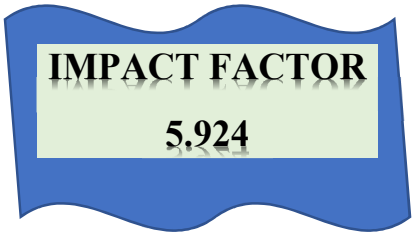

the growth of agricultural output in Nigeria while agricultural credit guarantee scheme funds (ACGSF) had significant negative impacts with a p-value of 0.0053 on the growth of agricultural output in Nigeria. The study also revealed a strong causal relationship between interest rates on loans and commercial banks credit to the agricultural sector. Furthermore, the post-estimation tests conducted revealed that the variance of the residuals were constant, not correlated but were not normally distributed in the study.
Therefore, the study concluded that the commercial banks' credit to the agricultural sector, government agricultural expenditure and interest rates on loans to the agricultural sector are the major determinants of agricultural output growth in Nigeria. The study therefore recommends that there should be an increase in the financing of the agricultural sector with lower interest rates on loans from commercial banks to attract agricultural stakeholders and further boost the growth of agricultural output in Nigeria.
Keywords: Agricultural financing, agricultural output growth.

1. INTRODUCTION

Agriculture is the practice of cultivating crops and rearing of animals for the purpose of producing food for man, animals, as well as the provision of raw materials for industries. Agriculture is the largest economic activity in the rural areas of Nigeria where almost 50% of the population lives (Cletus and Sunday, 2018).The sector plays an indispensable role in the economic development process of developing countries and this role cannot be overemphasized. Generally, the sectors' contribution to the development of an economy can be noted in four major ways; production contribution, factor contribution, market contributions and foreign exchange contribution (Iganiga and Uhemhilin, 2011). These contributions in effect have been the source of gainful employment opportunity with attendant implications for poverty alleviation and improvement of income distribution. Based on these contributions, agriculture is regarded as the fundamental to the Socio-economic development of a nation (Ahmed, 1993).

Until the discovery of oil in Nigeria, agriculture was the most important sector of the economy accounting for more than two-thirds of colonial Nigeria's export earnings. The contributions of agriculture declined drastically during the civil war (1967-70) and after the discovery of oil in Nigeria due to lack of visionary planning for sustainable development. Nigeria, a nation that had been a major agricultural net exporter and was largely self-sufficient in food production quickly

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

became a net importer of agricultural commodities. Inadequate financing and lack of proper management has been identified as a major cause of the low performance of the Nigerian agricultural sector (Orji *et al* 2014).

Agricultural financing is one of the most important instruments of economic policy for Nigeria, in her effort to stimulate development in all directions (Obansa and Maduekwe, 2013). The role of finance in agriculture, just like in the industrial and service sectors, cannot be over-emphasized, given that it is the oil that lubricates production (Eze *et al* 2010). Agricultural financing is mainly a long-term financing aimed at inducing agricultural-led growth and development in an economy (Obansa and Maduekwe, 2013).

To address the challenges of agricultural financing deficit and achieve food security, the Federal Government of Nigeria has introduced various financing scheme to enhance availability and accessibility of fund for agriculture. Some of these schemes are the Agricultural Credit Guarantee Scheme Fund (ACGSF), Agricultural Credit Support Scheme (ACSS), Commercial Agriculture Credit Scheme (CACS) and the Anchor Borrowers Programme. Government also can directly influence activities in the agricultural sector directly and indirectly using both the capital expenditure and recurrent expenditure. Capital expenditure involves expenditure on the building of feeder roads in rural areas, silos, tractors and other equipment for farmers, resulting in increased output and well-being of lives of people in those areas. Provision of loan facilities, subsidizing of farm inputs and financial support to farmers would make the agricultural sector more attractive and raising entrepreneurship in agribusiness, thereby leading to positive externalities to other sectors of the economy.

In light of the above, agricultural financing is relevant for improving the efficiency and efficacy of the sectors' operations. Against this backdrop, this study focused on the effect of agricultural financing on agricultural output growth in Nigeria between the years 1980 to 2022 with a particular spotlight on commercial bank credits, agricultural credit guarantee scheme funds, and government agricultural expenditure and how these variables contribute to the agricultural output growth process. Towards this end, this study seeks answers to the following research questions:

1. What relationship exists between agricultural financing and agricultural output growth in Nigeria?
2. Is there a causal relationship between Nigeria's agricultural output growth and agricultural financing sources?

2. LITERATURE REVIEW

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Agricultural financing has been defined by various authors in different ways. Obansa and Madukwe, (2013) defined agricultural financing as the mobilization of resources at all levels in order to increase production and productivity in agriculture and to enhance the productive capacity. Mattia et al (2016) defined agricultural financing as the provision of credit which is crucial to the development of the farming sector. It includes both government money and non-governmental groups working toward sector growth, economic empowerment, and social empowerment. In the same vein, Adejumo and Bolarinwa (2017) hypothesized agricultural financing programs as part of financial arrangements set up by the government at all levels to assist farmers' access to finance and invariably boost agricultural productivity.

The nexus between agricultural financing and agricultural output growth has been examined by several researchers and these includes the research works of; Obudah and Tombofa (2016), in their study on the effect of agricultural financing on output growth and macro-economic growth in Nigeria collected data from CBN Bulletin and used the ordinary least squares method, co-integration and error correction technique to do the analysis. Their result showed that there existed a positive relationship between agricultural credit and agricultural output. They also found that agricultural credit has a positive effect on the real GDP over the period of study. They asserted that failure of borrowers to payback credit had caused a reduction in lenders confidence and this is a serious limitation to the financing of the agricultural sector in Nigeria. Egwu (2016) investigated the impact of agricultural financing on agricultural output, economic growth and poverty alleviation in Nigeria with the use of the ordinary least square regression technique. The study result revealed that the Credit Guarantee Scheme Fund Loan and the commercial banks credit to Nigeria's Agricultural sector has significantly impacted agricultural output positively thereby reducing the poverty rate and stimulated the economic growth within the study period. The result also predicts that in the long-run, farmers should be able to apply their own funds for agricultural development even without loans from the Guarantee Scheme Fund.

In another recent study, Olowofeso et al (2017) investigated the relationship between agricultural sector financing and agricultural output growth using the non-linear auto-regressive distributed lag (NARDL) model. Their findings showed no evidence of asymmetry in the impact of agricultural sector credit on agricultural output growth in the short-run but indicated different long-run stability relationships between agricultural sector credit and output growth in the agricultural sector. Iganiga and Unemhilin (2011), investigated the effect of Federal government agricultural expenditure on agricultural output in Nigeria. They employed co- integration and error correction methodology to determine the nature of the relationship and the results showed that a positive relationship exists between government capital expenditure and agricultural output, however, it

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

was also noted by the researchers that with a one-year lag period, the result shows that the impact of government expenditure on agriculture is not instantaneous. The results revealed negative effects from total credit to agriculture and population growth rate, this negative effect confirmed that it is not enough to give out credit facilities for agricultural practices without proper monitoring it.

Megbowon et al (2019) studied the impact of government expenditure on agricultural productivity in South Africa using annual time series data from 1983 to 2016. The Bounds Co-integration test and ARDL model were used in this study. The study found government expenditure on agriculture to be of significance effect on agricultural productivity. It showed that there is a long-run positive relationship between government expenditure on agriculture and agricultural productivity. Uremadu et al, (2018) studied the effect of government agricultural expenditure on agricultural output using time series data from 1981 to 2014. The data was analyzed using co-integration test and vector error correction model. The Johansen co-integration tests revealed that there is a long-run relationship between agricultural output and government agricultural expenditure. The vector error correction model results indicated that agricultural output adjusted rapidly to changes in total government agricultural expenditure, real exchange rate, banking system credit to agriculture, average annual rainfall and population growth rate. Other related research studies includes; Lawal and Abdullahi (2011), Adofu (2012), Mathew and Mordecai (2016), Ewubare and Eyitope (2015) and Idoko et al (2012) among others.

3. METHODOLOGY

The study area is officially known as the Federal Republic of Nigeria, but often times referred to as Nigeria. It is a country in the lower middle income group with a gross national per capita income of US$1,190.00, and its currency is the Naira, which is equal to the sub division of 100 kobo (FAO, 2012). The major exports of the country are: crude oil (petroleum), natural gas, sesame, cashew nuts, leather, tobacco, shrimps and prawns, cocoa, cassava, rubber, food, live animals, aluminium alloys and other solid minerals, (CIA World Fact book 2015) while major imports are: refined petroleum products, wheat, rice, sugar, herbicides, fertilizers, chemicals, vehicles, aircraft parts, vessels, vegetable products, processed food, beverages, spirits and vinegar, equipment, machines and tools (NBS 2015).

The research work used secondary data in the form of annual time series data. The time series data were collected for the period between 1980 and 2022, denoting a period of 43years.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

The sources of data used were; Central Bank of Nigeria (CBN) Statistical Bulletin, World Development Indicators (WDI) and FAOSTAT data. The data collected from FAOSTAT include:

(a.)Value of Agricultural Production (1980-2022).
(b.) Population data (1980-2022)

The data on:

(i) Government agricultural expenditure,
(ii) Commercial banks credit to the agricultural sector and
(iii) Agricultural credit guarantee scheme funds were collected from the CBN's statistical bulletins for the years 1980-2022. While data for
(iv) Interest rates on loans to the agricultural sector were collected from the World Development Indicators (WDI) for the years 1980-2022.

For this research study, firstly descriptive statistics such as the mean, median, minimum, maximum, standard deviation, kurtosis and skewness were used to describe each variable. The variables includes, government agricultural expenditure data, agricultural credit guarantee scheme funds, interest rates on loans to the agricultural sector data and the commercial banks credit to the agricultural sector data in Nigeria.

Stationarity test was carried out in order to overcome the issue of non-stationarity of time-series data. The test conducted is the augmented dickey fuller's test (ADF).

The research made use of the Autoregressive Distributive Lag (ARDL) of econometric method of analysis to establish the relationship that exist between agricultural financing and agricultural output growth. The study adopts the ARDL model due to its robustness and consistency in time series analysis. ARDL bound testing can be used conveniently regardless of the sequence of series integration because it has both long-run and short-run dynamics i.e. whether I(1) or I(0).

Post-estimation tests such as heteroskedasticity test, serial correlation test, normality test and stability test were conducted to checkmate the residuals of the series used in this study.

Furthermore, Pair-wise granger causality test was employed to examine the causal relationships among the variables used in the study.

The Autoregressive Distributed Lag (ARDL) Model

This model is used when the data set contains both I(0) and I(1) variables. ARDL and bounds test is the most suitable technique for examining the long and short run relationship between agricultural output growth and agricultural financing sources. The technique is superior to other approaches of co-integration (such as Johansen and Engel Granger) due to the following reasons:

(i) The approach does not require all variables to be integrated of order one.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

(ii) It can be applied to a small sample size.
(iii) It also produces unbiased estimates even in the presence of endogenous co-variates (Harris and Sollis, 2003).
(iv) The method can be applied even when the variables have different optimal number of lags and
(v) The approach can further estimate the short and long run relationships between the dependent variables and its predictors.

In order to specify the functional form of the model, thus;

$AOG = \int (GAEX, ACGSF, CBCA\ and\ INTR)$..... (1)

The above equation can be written as;

$AOG_t = \alpha + \beta_1 GAEX + \beta_2 ACGSF_t + \beta_3 CBCA_t + \beta_4 INTR_t + \mu_t$..... (2)

Equation could be modified to the autoregressive distributed lag model in its broadest version as follows:

$\Delta\ lnAOG_t = \beta_0 + \beta_1 lnGAEX_{t-1} + \beta_2 lnACGSF_{t-1} + \beta_3 lnCBCA_{t-3} + \beta_4 lnINTR_{t-1} + + \mu_t$.....(3)

Where:

Δ stands for difference in respective variables and (-) is a lag sign.

AOG stands for agricultural output growth,

GAEX stands for Government agricultural expenditure,

ACGSF stands for agricultural credit guarantee scheme funds,

CBCA stands for commercial banks' credit to the agricultural sector,

INTR stands for interest rates on loans to the agricultural sector

μ_t Stands for the error term

Model Specification

The estimation of the relationship between agricultural output growth and agricultural financing sources for this research study is structured econometrically as specified below:

$Y_t = \beta_0 + \beta_1 GAE_t + \beta_2 ACGSF_t + \beta_2 CBCA_t + \beta_3 INT_t + \mu_t$..... (4)

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Where, Y_t is the dependent variable, β_0 is the intercept, β_1 is the parameter of explanatory variable, β_2-β_3 is the vector of the parameters of other explanatory variables and μ_t is the error term (assumed to have zero mean and independent across time period).

The econometric model in equation 4 was adopted to examine the impact of agricultural financing on agricultural output growth in Nigeria from 1980-2022, the properties of the series were tested with the application of recent unit root and co-integration tests, the equation, with all the series converted into natural log to stabilize the variance, is expressed and estimated as follows:

$\ln Y_t=\beta_0+\beta_1 \ln GAE_t+\beta_2 \ln ACGSF_t+\beta_2 \ln CBCA_t+\beta_3 \ln INT_t+\mu_t$…….(5)

Where:

ln= Natural Logarithm

Y=Agricultural output growth

GAEX=Government agricultural expenditure

CBCA=Commercial banks credit to the agricultural sector

ACGSF=Agricultural credit guarantee scheme funds

INTR=Interest rate on commercial bank loans to the agricultural sector

μ_t=Stochastic error term

t=Time subscript

β_0=Intercept

β_1-β_4=Parameters of estimate

4. RESULTS AND DISCUSSION

The results for data analysis carried out for this research study is presented in this chapter and the chapter is divided into five parts. The first part contains the descriptive statistics of the variables, the second parts entails the trend analysis of the variables, part three holds the unit root test, part four contains the co-integration test and part five is for the granger causality test.

Descriptive Statistics of the Variables

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Table 1 presents the descriptive statistics of the variables employed in this research study. The mean value of ACGSF, GAEX, CBCA, INTR and AOG were 3959475.10, 26970.44, 78936.67, 13.01535 and 2828.071 respectively while their standard deviations were 4790653.12, 27664.02, 132652.00, 4.350515 and 858.1157 respectively. The mean above shows the average values of variables during the specified time period, while the standard deviation takes into account the deviation of the minimum and maximum variable values of the mean. The table also shows that all variables were positively skewed and the Jarque-Bera result suggests that not all the variables were normally distributed as the p-values are significant at 5% level of significance.

Table 1 Descriptive Statistics

	ACGSF	CBCA	GAEX	INTR	AOG
Mean	3959475.	78936.67	26970.44	13.01535	2828.071
Median	728545.4	25300.00	16045.20	13.88000	2913.641
Maximum	14624110	498420.0	107463.9	19.18000	4621.762
Minimum	24654.90	50.00000	285.5000	5.890000	0.213854
Std.dev.	4790653.	132652.0	27664.02	4.350515	858.1157
Skewness	0.739378	2.004993	0.828125	-0.226093	-0.50914
Kurtosis	1.961068	5.866424	2.900005	1.449373	4.392734
Jarque-Bera	5.851758	43.53099	4.932746	4.674308	5.333123
Probability	0.053618	0.000000	0.084892	0.096602	0.069491
Sum	1.70E+08	3394277.	1597229.	559.6600	121607.1
SumSq.Dev.	9.64E+14	7.39E+11	3.21E+10	794.9331	30927228

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Observations	**43**	**43**	**43**	**43**	**43**

Source: Computed by the Author using E-Views 12, 2024

Estimation of Unit Root Tests

Table 2 presents the results of the Augmented Dickey-Fuller (ADF) unit root tests for variables included in the research study. The ADF test helps determine whether a time series variable is stationary, which is crucial for econometric modelling to avoid spurious regression results.

The ADF unit root test results indicate that the variables ACGSF, CBCA and INTR are integrated of order 1, requiring first differencing to achieve stationarity while GAEX and AOG was already stationary in its level form and thus integrated of order 0.

Table 2: Results of Augmented Dickey-Fuller Unit Root Tests

Variables	ADF test statistic	Probability value	Order of Integration
AOG	-5.151772	0.0007*	1(0)
GAEX	-3.885797	0.0215**	1(0)
ACGSF	-4.674363	0.0035*	1(1)
CBCA	-7.05835	0.0000*	1(1)
INTR	-7.398781	0.0000*	1(1)

*&**Significant at 1% and 5% Level of Significance (LOS) respectively. ADF is calculated with trend and intercept using Lag Length: 1 (Automatic-based on SIC, max lag=9)*

Source: Computed by the Author using E-Views 12, 2024

Estimate of Co-integration using the Autoregressive Distributed Lag with Error Correction Regression

The ARDL (Auto-Regressive Distributed Lag) model analysis as presented in Table 4.3 examines the relationship between agricultural output growth and its determinants (the agricultural financing sources) over the period from 1980 to 2022. Also, the Error Correction Model (ECM) for the short-run co-integration results is presented in table 4.

Table 3 presents the result for the ARDL long-run form of co-integration test, the result shows that CBCA, ACGSF and INTR were significant at 5% level of significance with p-values of 0.0037, 0.0053 and 0.0013 respectively.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

CBCA has a positive coefficient of 0.880400 and a p-value of 0.0037. This indicates that a unit increase in CBCA will lead to an increase in AOG by 0.880400. INTR also had a positive coefficient of 2.590431 with a p-value of 0.0013, indicating that a unit increase in INTR will lead to a 2.590431 increase in AOG. However, ACGSF has a negative coefficient of -1.109964 and was positively significant at 5% level of significance. This suggests that an increase in ACGSF will lead to a decrease in AOG by 1.109964. This could be as a result of corruption, misappropriation and embezzlement of funds by the administrator of such funds.

The R-squared value of 0.690882 and the adjusted R-squared value of 0.645424 suggest that about 69% of the variation in the Agricultural output grow is explained by the independent variables which are: GAEX, ACGSF, CBCA and INTR. This shows that the model is well-fitted and has a tight fit, therefore, the model is statistically robust. The Durbin-Watson statistic value is 2.162533 indicating that there is no issue with auto-correlation in the residuals. This diagnostic statistics indicates that the model is well-specified and explains a substantial proportion of the variation in agricultural output growth. The probability value of the F-statistic equals 0.0000 showing that the model is significant at the 5% level of significance.

The F-bounds test is used to determine whether there is a long-run relationship (co-integration) among the variables. The Wald F-statistic value is 6.050370. This is compared to the critical values at different significance levels. For the 5% significance level, the critical bounds are 2.86 for the lower bound and 4.01 for the upper bound. The Wald F-statistic is greater than the upper bound critical value of 4.01 suggesting a strong indication of long-run relationship among the variables. Therefore, we reject the null hypothesis of no long-run relationship between the variables in the model.

The key output from the result presented in table 4 is the error correction model coefficient. The coefficient of the error correction term (Co-intEq(-1)) is -1.197515. This negative and significant value confirms the existence of a long-run equilibrium relationship. This suggests that deviations from long-run equilibrium are corrected at a rate of about 120% per period, implying a strong adjustment back to equilibrium. This negative and statistically significant coefficient (p-value = 0.0000) indicates the speed at which the dependent variable returns to equilibrium after a change in the independent variables. Specifically, it suggests that approximately 120% of any deviation from the long-run equilibrium is corrected within one period. This high adjustment speed implies a strong and stable long-run relationship between the variables. Significant coefficients in the ECM also suggest that variables such as ACGSF and CBCA have substantial impacts in the short run.

Table 3: Auto-regressive Distributed Lag result for long-run relationship

Levels Equation

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Case 3: Unrestricted Constant and No Trend

Variable	Coefficient	Std. Error	t-Statistic	Prob.
LNGAEX	0.318698	0.229206	-1.390439	0.1767
LNCBCA	0.880400*	0.275281	3.198183	0.0037
LNACGSF	-1.109964*	0.363374	-3.054604	0.0053
LNINTRATE	2.590431*	0.714726	3.624371	0.0013

EC = LNAOG - (0.3187*LNGAEX + 0.8804*LNCBCA - 1.1100*LNACGSF + 2.5904*LNINTRATE)

F-Bounds Test			Null Hypothesis: No levels relationship	
Test Statistic	Value	Signif.	I(0)	I(1)
F-statistic	6.050370	10%	2.45	3.52
K	4	5%	2.86	4.01
		2.5%	3.25	4.49
		1%	3.74	5.06

t-Bounds Test			Null Hypothesis: No levels relationship	
Test Statistic	Value	Signif.	I(0)	I(1)
t-statistic	-5.372698	10%	-2.57	-3.66
		5%	-2.86	-3.99
		2.5%	-3.13	-4.26

*** significant at 1% level of significance**

Source: Computed by the author using E-views12, 2024.

Table 4: Error correction model regression estimate for short-run relationship

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

ECM Regression				
Case 3: Unrestricted Constant and No Trend				
Variable	Coefficient	Std. Error	t-Statistic	Prob.
C	12.39514	1.609262	7.702378	0.0000
D(LNGAEX)	-1.118456*	0.311016	-3.596129	0.0011
D(LNCBCA)	-0.874366	0.819924	-1.066398	0.2948
D(LNCBCA(-1))	-1.831704**	0.829420	-2.208415	0.0350
D(LNCBCA(-2))	-1.329710	0.838898	-1.585069	0.1234
CointEq(-1)*	-1.197515	0.155317	-7.710138	0.0000
R-squared	0.690882	Mean dependent var		0.023728
Adjusted R-squared	0.645424	S.D. dependent var		2.157259
S.E. of regression	1.284568	Akaike info criterion		3.476202
Sum squared resid	56.10387	Schwarz criterion		3.729534
Log likelihood	-63.52405	Hannan-Quinn criter.		3.567799
F-statistic	15.19811	Durbin-Watson stat		2.162533
Prob(F-statistic)	0.000000			
* p-value incompatible with t-Bounds distribution.				

Source: Computed by the Author using E-Views 12, 2024

Residual Tests:

Heteroskedasticity Test

This test checks if the variance of the residuals is constant (homoskedasticity) or if it varies (heteroskedasticity).The probability value (F-statistics) with the value 0.549588 is not significant showing the residuals are constant which amounts to homoskedaticity.

Table 5: heteroskedasticity test result

Heteroscedasticity test: Breusch-Pagan-Godfrey
Null hypothesis: Homoskedasticity

F-statistic	0.961036	Prob. F(24,14)	0.5496
Obs*R-squared	24.26906	Prob. Chi-Square(24)	0.4463

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Scaled explained SS	8.849067	Prob. Chi-Square(24)	0.9979

Source: Computed by the Author using E-Views 12, 2024

Serial Correlation LM Test

This test checks for serial correlation (autocorrelation) in the residuals. The insignificant nature of the probability value of 0.9092 indicates that the residuals are not correlated overtime. This implies that residuals are not correlated over time, which leads to unbiased standard errors and efficient estimators.

Table 6: Serial correlation test result

Breusch-Pagan-Godfrey Serial Correlation LM Test
Null hypothesis: No serial correlation

F-statistic	0.099360	Prob. F(2,12)	0.9062
Obs*R-squared	0.635319	Prob. Chi-Square(2)	0.7279

Source: Computed by the Author using E-Views 12, 2024

Normality Test

The null hypothesis (H0) is that the residuals are normally distributed. The normality test typically provides the p-value of 0.0000. As such, the p-value is below the 5% therefore we reject the null hypothesis, suggesting that the residuals are not normally distributed.

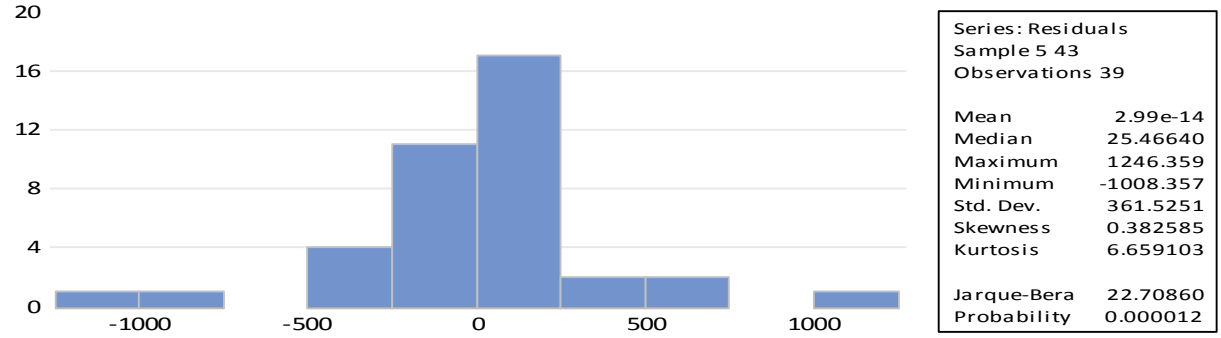

Source: Computed by the Author using E-Views 12, 2024

Fig. 1 Normality Test Graph

Stability Test

In this graph, the CUSUM line stays within the 5% significance boundaries throughout the sample period. This indicates that the model is structurally stable at the 5% significance level. There is no

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

evidence of a structural break or instability in the regression coefficients over the time period analyzed.

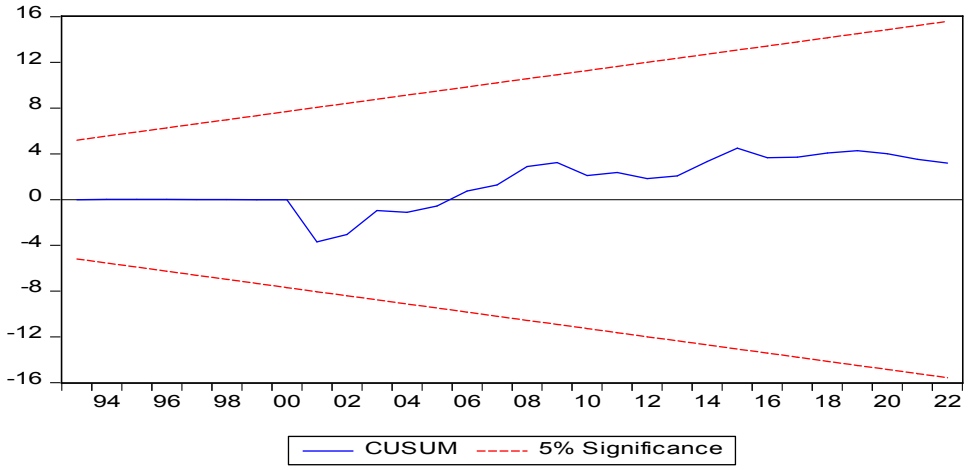

Source: Computed by the Author using E-Views 12, 2024

Fig. 2 Stability Test Graph.

Causal relationship that exists between Agricultural Financing Sources and Agricultural Output Growth in Nigeria.

The analysis examined the causal relationships between several variables representing Agricultural Financing Sources, GAEX (government agricultural expenditure), CBCA (commercial banks credit to the agricultural sector), and INTR (interest rate) and Agricultural Output Growth (AOG) in Nigeria. The test evaluated whether each variable "Granger causes" the others, which means whether it statistically helps predict changes in another variable.

The results indicate that between GAEX and AOG there is no strong evidence to suggest that government agricultural expenditure (GAEX) Granger causes agricultural output growth (AOG), as the p-value (0.3430) is higher than conventional significance levels (such as 0.05). Similarly, agricultural output growth does not Granger cause government agricultural expenditure (p-value = 0.2231).

The relationship between CBCA and agricultural output growth (AOG) also lacks strong evidence of Granger causality (p-value = 0.1447). Also, agricultural output growth (AOG) does not Granger cause CBCA, as indicated by a high p-value of 0.9734. There is also no significant Granger causality from interest rates to agricultural output growth (p-value = 0.9540). Similarly,

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

agricultural output growth (AOG) does not Granger cause changes in interest rates (INTR) (p-value = 0.4010). CBCA does not significantly Granger cause government agricultural expenditure (GAEX) (p-value = 0.3618). Likewise, government agricultural expenditure (GAEX) does not Granger cause changes in CBCA (p-value = 0.1861).

There is some weak evidence (p-value = 0.0692) to suggest that interest rates (INTR) might Granger cause changes in government agricultural expenditure (GAEX), but this result is not strong enough to confidently reject the null hypothesis. Conversely, there is stronger evidence (p-value = 0.0266) that government agricultural expenditure (GAEX) does Granger cause changes in interest rates (INTR), suggesting a potential predictive relationship. There is no significant evidence that interest rates Granger cause changes in CBCA (p-value = 0.6907). However, there is evidence (p-value = 0.0370) suggesting that CBCA Granger causes changes in interest rates (INTR), indicating a predictive relationship between CBCA and interest rates (INTR).

Overall, these results indicate varying levels of predictive relationships among the variables tested. While some relationships show potential predictive power (such as CBCA on INTR), others do not provide strong evidence of causal influence.

Table 7: Results from the Pair-wise Granger Causality model

Null Hypothesis	F-statistic	Prob.
GAEX does not Granger Cause AOG	1.11538	0.3430
AOG does not Granger Cause GAEX	1.59037	0.2231
CBCA does not Granger Cause AOG	2.08392	0.1447
AOG does not Granger Cause CBCA	0.02704	0.9734
INTR does not Granger Cause AOG	0.04720	0.9540
AOG does not Granger Cause INTR	0.94677	0.4010
CBCA does not Granger Cause GAEX	1.05756	0.3618
GAEX does not Granger Cause CBCA	1.79510	0.1861
INTR does not Granger Cause GAEX	2.96428	0.0692
GAEX does not Granger Cause INTR	4.18202	0.0266
INTR does not Granger Cause CBCA	0.37530	0.6907
CBCA does not Granger Cause INTR	3.75373	0.0370

Source: Computed by the Author using E-Views 12, 2024

Hypothesis Testing

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Based on the research questions raised, the following hypotheses were tested thus;

H_{o1}: There is no relationship between agricultural financing and agricultural output growth in Nigeria.

Based on the findings of this study, the long run Auto regressive distributive lag estimates shows that there is a strong, stable, positive and significant relationship between agricultural financing and agricultural output growth in Nigeria. Therefore, the null hypothesis that states that there is no relationship between agricultural financing and agricultural output growth in Nigeria is rejected.

H_{o2}: Interest rates on loans to the agricultural sector has no impact on agricultural output growth in Nigeria.

The result analysis indicates that interest rates on loans to the agricultural sector in the long run had a positive and significant relationship with agricultural output growth in Nigeria. On the basis of this, the null hypothesis that states that interest rates on loans to the agricultural sector has no impact on the agricultural output growth in Nigeria is also rejected.

5. CONCLUSION AND RECOMMENDATIONS

The major conclusion of the study based on the findings of the study is that commercial banks' credit to the agricultural sector (CBCA), government agricultural expenditure (GAEX) and interest rate (INTR) had significant positive relationships with agricultural output growth (AOG) in Nigeria within the observed period. This suggests that a unit increase in commercial banks' credit to the agricultural sector, government agricultural expenditure as well as interest rate will result in an increase in the agricultural output growth. This implies that CBCA and GAEX as a source of agricultural financing have positive and significant effect on agricultural output growth (AOG). The study also reveals that agricultural credit guarantee scheme funds (ACGSF) had a negative and substantial relationship with agricultural output growth in the long run which means that a unit increase in agricultural credit guarantee scheme funds will result in a decrease in the agricultural output growth.

In light of the findings of the study, the research has the following major policy implications and recommendations:

Agricultural financing has a significant influence on agricultural output growth. Therefore, increasing the amount of funds for financing the agricultural activities will significantly improve the performance of the sector and undoubtedly raise the contribution of the sector to food security in Nigeria.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

i Commercial banks' credit to the agricultural sector also is of crucial importance and significantly influences the rate of agricultural output. As a result, the rate of interest on borrowing from the commercial banks should be very low to attract borrowers and also serve as an incentive to farming and other agricultural activities.

ii The study recommends financial adjustments on the government's budget so as to allocate more funds to the agricultural sector. This will thereby increase the governments' expenditure on agriculture and will provide funding for the smooth running of the sector.

iii The study also recommends providing easier access to agricultural loans for the farmers so as to increase the productivity of the agricultural sector. With adequate financing which is easily accessible, maintenance and purchase of farm equipment used for production will be made much easier which will hasten the production process and thus significantly have a positive impact on the output levels of the agricultural sector in Nigeria.

6. REFERENCES

1. Adejumo,O.A., & Bolarinwa, T.O.(2017). Analysis of the performance of the Agricultural Credit Guarantee Scheme Fund in Nigeria (1981-2016). Journals of Agricultural and Veterinary Science, 10(10):24-30.
2. Adofu I. Abula M., & Agama J.E (2012). Theeffectsofgovernmentbudgetaryallocationtoagriculturaloutputin Nigeria.SkyJournalofAgriculturalResearch.2012;1(1):1-5.
3. AhmedYO.Bankofthenorthpamphletsonagriculturalfinancing.VariouscircularsandPolicyGuidelinesonAgriculturalFinancinginBankoftheNorthLimited.APaperdeliveredatSeminarsatBankoftheNorthHumanResourcesandDevelopmentCentreby(Agric.Officer,BankoftheNorthLimited);1993.
4. Cletus,K.A. and Sunday, A.J., (2012).AgriculturalfinancinginNigeria:AnAssessmentoftheAgriculturalCreditGuaranteeSchemeFund(ACGSF)ForFoodSecurityinNigeria(1978-006).*JournalofEconomics,3*(1),39-48,
5. Egwu,P.N.2016.ImpactofAgriculturalFinancingonAgriculturalOutput,EconomicGrowthandPovertyAlleviationinNigeria.*JournalofBiology,bAgricultureandHealthcare*,6(2),36–42.
6. Ewubare,D.B.&Eyitope,J.A.(2015).TheEffectsofPublicExpenditureonAgriculturalProductionOutputinNigeria.*JournalofResearchinHumanitiesandSocialSciences*,11(3),07-23.
7. Eze,C.C.,Lemchi,J.I.,Ugochukwu,A.I.,Eze,V.C.,Awulonu,C.A.O.andOkon,

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

8. Idoko,C.U.,&Jatto,S.M.(2018).GovernmentExpenditureOnAgricultureAndEconomicGrowthInNigeria(1985-015).*InternationalJournalofAcademicResearchandReflection6(4)*,24-39.
9. Iganiga,B.O.andUnemhilin,D.O.2011.TheImpactofFederalGovernmentAgriculturalExpenditureonAgriculturalOutputinNigeria.*JournalofEconomics*,2(2),81–8.DOI:10.1080/09765239.2011.11884939.
10. Lawal,W.A.andAbdullahi,I.B.2011.ImpactofInformalAgriculturalFinancingonAgriculturalProductionintheRuralEconomyofKwaraState,Nigeria.*InternationalJournalofBusinessandSocialScience*,2(19),241–248.
11. Matthew,A.,&Mordecai,B.D.(2016).TheImpactofPublicAgriculturalExpenditureonAgriculturalOutputinNigeria(1981-2014).*AsianJournalofAgriculturalExtension,EconomicsandSociology11(2)*,1-10.
12. Mattia,G.L.,Riccardo,M.,Alessandro,P.,&Angela,T.(2016).Supplychainfinance:a
13. Obansa,S.A.J.,&Maduekwe,I.M.(2013).Agriculturefinancingandeconomicgrowthin Nigeria.EuropeanScientificJournal,9(1),168-204.
14. Obudah,B.C.andTombofa,S.S.2016.AgriculturalFinancing,OutputandMacroeconomicGrowth.*AfricanJournalofEconomicandSustainableDevelopment*,5(4),287–301.DOI:10.1504/AJESD.2014.065004.
15. Olowofeso,E.O.,Adeboye,A.A.,Adejo,V.T.,Bassey,K.J.andAbraham,O.2017.Agricultural SectorCreditandOutputRelationshipinNigeria:EvidencefromNonlinearARDL.*CBNJournalofAppliedStatistics*,8(1),101–122.
16. Orji,A.,Ogbuabor,J.E.andUmesiobi,S.2014.AgriculturalOutputs,FoodSecurityandEconomicDevelopment:SomePolicyOptionsandStrategiesforAfrica.*EuropeanJournalofSocialSciences*,45(3),305–318.
17. Megbowon,E.,Ngarava,S.,Etim,N.A.&Popoola,o.(2019).ImpactofGovernmentExpenditureonAgriculturalProductivityinSouthAfrica.*TheJournalofSocialSciencesResearch,5(12),*1734-1742.https://doi.org/10.32861/jssr.512.1734.1742
18. Uremadu,S.O.,Ariwa,F.O.,&Uremadu,C.E.D.(2018).Impactofgovernmentagriculturalexpenditureonagriculturaloutputin Nigeria.CurrentInvestigationsinAgricultureandCurrentResearch.5(3)632–641.https://doi.org/10.32474/CIACR.2018.05.000215.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

"पर्यटन और स्थानीय संस्कृति का संरक्षण:–मध्य प्रदेश के बड़वानी जिले के संदर्भ में"

[1]ज्योति शर्मा

[1]शोधार्थी, प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस शहीद भीमा नायक शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,बड़वानी

[2]डॉ दिनेश कुमार पाटीदार

[2]निर्देशक,सहायक प्राध्यापक (भूगोल) शासकीय आदर्श महाविद्यालय करी, बड़वानी

Paper Rcevied date

05/01/2025

Paper date Publishing Date

14/01/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.14739932

IMPACT FACTOR 5.924

सारांश

आधुनिक युग में पर्यटन को एक उद्योग माना जाता है। पर्यटन वर्तमान में विश्व का सबसे तेजी से विकसित होने वाला उद्यम है। सभी देशों का पर्यटन उस देश का एक महत्वपूर्ण भाग होता है। जो देश की अर्थव्यवस्था को एक शक्तिशाली अर्थव्यवस्था बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह अर्थव्यवस्था का प्रमुख स्रोत होता है। अधिकांश देशों की अर्थव्यवस्था पर्यटन पर निर्भर रहती है। पर्यटन को उद्यम इसलिए कहा जाता है कि एक पर्यटन स्थल के कारण कई परिवारों की आजीविका चलती हैं। पर्यटन विविध प्रकार के प्राकृतिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं धार्मिक अवयवों तथा आधारभूत सुविधाओं जैसे रू– यातायात, आवासीय सुविधाओं, शिक्षा, स्वास्थ्य, बैंकिंग, सुरक्षा आदि का मिश्रित अदृश्य उद्यम होती है। पर्यटन उद्योग का अध्ययन स्पष्ट करता है कि इसकी आवश्यकता, महत्व एवं भविष्य दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। पर्यटन उद्योग में रोजगार पैदा करने की असीम क्षमता तो है ही, साथ ही विदेशी मुद्रा अर्जन, मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करने, सांस्कृतिक आदान–प्रदान बढ़ाने, निर्माण कार्य में सहायक साथ ही इतिहास, भूगोल का ज्ञान संग्रहण की अपार संभावना है। पर्यटन से समुदाय की सांस्कृतिक परंपराओं पर गर्व बढ़ता है। इससे लोगों को अपनी सांस्कृतिक विरासत की सराहना करने और उसे भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित करने का अवसर मिलता है। यद्यपि पर्यटन एक उद्यम के रूप में विकसित हो रहा है, इस हेतु सांस्कृतिक गतिविधियों के संरक्षण के लिए और संवर्धन के लिए योजनाएं और नीतियां तैयार करनी चाहिए ताकि पर्यटन के माध्यम से सांस्कृतिक विरासत को प्रोत्साहन मिल सके।

बीज शब्द : आधुनिकता, पर्यटन, उद्यम, विकास, अर्थव्यवस्था, परिवार, आजीविका, प्राकृतिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, आधारभूत सुविधाएं, शिक्षा, स्वास्थ्य, मैत्रीपूर्ण संबंध, रोजगार, संरक्षण, विरासत, परंपरा ।

प्रस्तावना :

भारत में पर्यटन के क्षेत्र में असीम संभावनाएं हैं दुनिया भर के पर्यटक आज भारत की ओर रुख कर रहे हैं। जिसके कारण भारत का पर्यटन अत्यधिक तेजी से फल फूल रहा है। भारत देश की विशालता का परिचय यहां विद्यमान पर्यटन स्थलों से ज्ञात किया जा सकता है। देश की आर्थिक समृद्धि में पर्यटन का विशेष योगदान है परंतु विकास का पिरामिड कभी ऊपर तो कभी नीचे होता रहता है। पर्यटन उद्योग में उतार–चढ़ाव के मुख्य कारणों में महामारी, आतंकवाद, प्राकृतिक आपदाएं तथा मौसम का बदलता स्वरूप आदि शामिल है। उक्त सभी कारणों के बावजूद भारतीय परिस्थितियां पर्यटकों को सदैव अपनी ओर

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

आकर्षित करती है। इस श्रेणी में देश के ह्रदय प्रदेश में स्थित सतपुड़ा प्रदेश भी पीछे नहीं है। सतपुड़ा की सुरम्य वादियों में बसे बड़वानी जिले की पहचान अपने प्राकृतिक, सभ्यता, संस्कृति के विविध रंगों व धार्मिक स्थलों के लिए हैं। प्राकृतिक सुंदरता सुंदरता से परिपूर्ण बड़वानी जिले को एक आदर्श पर्यटन क्षेत्र होना चाहिए, परंतु कुछ कारणवश ऐसा नहीं है। यह जिला सतपुड़ा श्रेणी की संपूर्ण चौड़ाई को घेरे हुए हैं जो नर्मदा घाटी और उसके दक्षिण के मैदान तक फैला है। यहां के जंगलों में जंगली जानवर देखने के लिए दूर–दूर से पर्यटक आते हैं, जो की आकर्षण का केंद्र है। क्षेत्र का निरंतर विकास हो रहा है जिसमें होटल, विश्रामगृह, जलपान गृह आदि इन्हीं कारणों ने पर्यटन व्यवसाय के प्रति जागरूकता को स्पष्ट किया है। इस प्रकार पर्यटन के क्षेत्र में जैसे–जैसे विस्तार होता जाएगा वैसे–वैसे क्षेत्र के निवासियों के लिए रोजगार के अवसरों में विस्तार होगा। जिससे क्षेत्र का आर्थिक विकास प्रगति के पथ पर अधिक गति से दौड़ने लगेगा। पर्यटन

पर्यटन और स्थानीय संस्कृति – संरक्षण :–

पर्यटन वर्तमान में एक प्रमुख उद्योग के रूप में उभर चुका है। ज्ञात है कि इस उद्योग में पर्यटन स्थलों पर जीविकोपार्जन के लिए संपूर्ण सुविधा उपलब्ध कराना एवं कई लाभकारी व्यवसायों का संचालन करना, जिससे धन अर्जित किया जाता है। इन्हीं कारणों से पर्यटन उद्योग किसी भी देश की आय का प्रमुख स्रोत होता है।

ज्ञातव्य है कि कोलंबस ने साहसिक यात्रा के जरिए अमेरिका की खोज कर ली, तो वास्कोडिगामा ने भारत को खोज निकाला, ह्वेनसांग, फाह्यान, मेगास्थनीज आदि ने दुर्गम राहें तय करते हुए भारत आकर बौद्ध दर्शन समेत अनेक प्रकार का ज्ञान प्राप्त किया। इन्हीं कई यात्राओं द्वारा पर्यटन शब्द का उद्‌गम हुआ।

पर्यटन एक ऐसी यात्रा है जो मनोरंजन या फुर्सत के क्षणों का आनंद उठाने के उद्देश्य से की जाती है। विश्व पर्यटन संगठन के अनुसार पर्यटक वे लोग हैं जो यात्रा करके अपने सामान्य वातावरण से बाहर के स्थान में रहने जाते हैं। यह दौरा ज्यादा से ज्यादा मनोरंजन के लिए, व्यापार और अन्य उद्देश्यों से किया जाता है।

जनजातीय क्षेत्र में पर्यटन मात्र एक व्यावसायिक उद्यम नहीं है, अपितु सामाजिक स्थानीयता और परिवेश के आधार पर लोकप्रिय है। जनजातीय क्षेत्र में सांस्कृतिक और धार्मिक पर्यटन की मुख्य पहुंच है, जो पर्यटकों के समक्ष आसानी से उपलब्ध है, क्योंकि पर्यटन में बाहरी तत्व प्रभावित करता है।

भारतीय परंपरा (संस्कृति) ष्अतिथि देवो भवष् की रही है। इस कारण पर्यटकों को देवों के समान समझा जाता है। यही संस्कृति आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र जिला बड़वानी में देखी जाती है यही परंपरा (संस्कृति) पर्यटकों को आकर्षित भी करती है। ष्अतिथि देवो भवष् की परंपरा के निर्वहन में कमी होने से पर्यटकों में आकर्षण की कमी देखी जा सकती है। जिसका प्रभाव क्षेत्र, राज्य, देश सभी की अर्थव्यवस्था पर स्वतः ही देखा जा सकता है।

अध्ययन क्षेत्र :

उक्त शोध पत्र का अध्ययन क्षेत्र भारत देश के मध्य प्रदेश राज्य के दक्षिण–पश्चिम में स्थित बड़वानी जिला है। जिले का क्षेत्रफल 5427 वर्ग किलोमीटर तथा जनसंख्या 1385881 (2011 जनगणना) है। बड़वानी जिले की स्थापना 25 मई 1998 को हुई। नर्मदा नदी इसकी उत्तर सीमा बनाती है। जिले के दक्षिण में सतपुड़ा एवं उत्तर में विंध्याचल पर्वत श्रेणियां है।

जिला बड़वानी 21 डिग्री 37 मिनट से 22 डिग्री 22 मिनट उत्तर अक्षांश, 74 डिग्री 27 मिनट से 75 डिग्री 30 मिनट पूर्वी देशांतर के बीच फैला है। संपूर्ण जिला 09 तहसीलों – बड़वानी, ठीकरी, राजपुर, सेंधवा, पानसेमल, निवाली अंजड़, पाटी एवं वरला में विभाजित है। इसकी समुद्र तल से औसत ऊंचाई ..... पर स्थित है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

कुल जनसंख्या पुरुष 599340, कुल जनसंख्या महिला 686541, कुल ग्रामीण जनसंख्या 1181812, कुल जनसंख्या शहरी 204059 है।

शोध के उद्देश्य :

1) पर्यटन उद्योग के विकास मॉडल का अध्ययन करना।

2) पर्यटन उद्योग के विविध आयामों का अध्ययन करना।

3) पर्यटन एवं संस्कृति के संरक्षण का विश्लेषण करना।

शोध प्रविधि :

किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान के बारे में ज्ञान प्राप्त करने की प्रविधि या ज्ञान की खोज के लिए प्रयोग में ले गए प्रविष्टि प्रक्रिया को शोध प्रविधि कहा जाता है। यह एक प्रकार की वैज्ञानिक प्रविधि है जो कि किसी भी शोध कार्य को करने के लिए प्रयोग में लाई जाती है। उक्त शोध पत्र को तैयार करने में द्वितीयक समंको वाली प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

पर्यटन स्थल :

1) सिद्ध क्षेत्र चूलगिरी बावनगजा बड़वानी: (श्रेणी – धार्मिक एवं प्राकृतिक)

सिद्ध क्षेत्र चूलगिरी बावनगजा बड़वानी जिले का एक प्रमुख धार्मिक स्थल है यह एक अति प्राचीन जैन तीर्थ स्थल है। यह क्षेत्र करीब 2000 साल पुराना है। बावनगजा सिद्ध क्षेत्र सातपुडा पर्वतमालाओं के सबसे ऊंचे पर्वत पर स्थित है। यह पर्वत समुद्र तल से 2200 फीट की ऊंचाई पर है। यह बावनगजा सिद्ध क्षेत्र में लंकापति रावण के पुत्र इंद्रजीत और भाई कुंभकरण ने मोक्ष की प्राप्ति की थी। इंद्रजीत और कुंभकरण के मोक्ष प्राप्त करने के कारण ही इस जगह को सिद्ध क्षेत्र कहा जाता है। यहां जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव जी की 84 फीट की खड़गासन विश्व की सबसे ऊंची प्रतिमा देखने को मिलती है। उक्त स्थल बड़वानी मुख्यालय से 8 किलोमीटर की दूरी पर है जहां बस, कार, बाइक द्वारा आसानी से पहुंचा जा सकता है।

2) श्री पार्श्व गिरी जैन मंदिर: (श्रेणी – धार्मिक व प्राकृतिक)

श्री पार्श्व गिरी जैन मंदिर जिले का प्रमुख धार्मिक स्थल है। यह एक जैन मंदिर है यह मंदिर ऊंची पहाड़ी पर स्थित है, बहुत सुंदर है। यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिए भी सुविधा उपलब्ध है। यहां चारों तरफ सुंदर नजारा देखने को मिलता है। यह स्थल जिला मुख्यालय से बावनगजा रोड पर 5 किलोमीटर पर स्थित है। जहां पर कार, बस, बाइक द्वारा आसानी से पहुंच सकते हैं।

3) राजघाट बड़वानी : (श्रेणी–धार्मिक व प्राकृतिक)

बड़वानी जिले की जीवन रेखा मां नर्मदा के तट पर स्थित घाट राजघाट जिले का प्रमुख धार्मिक एवं प्राकृतिक पर्यटन है। यहां नर्मदा नदी के किनारे पर सुंदर घाट एवं प्राचीन मंदिर है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की समाधि के नाम से प्रसिद्ध राजघाट (कुकर गांव) में गांधीवादी विचारकों ने बापू के अस्ति कलश को यहां स्थापित किया था। उक्त स्थल जिला मुख्यालय से 4 किलोमीटर दूरी पर है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

4) तीर गोला : (श्रेणी–ऐतिहासिक)

तीर गोला बड़वानी जिले का बड़वानी शहर में एक ऐतिहासिक स्थल है। यहां पर तीर और एक गोला का बहुत बड़ा मॉडल देखने को मिलता है। यह मॉडल सीमेंट, ईट से बनाया गया है। इसके निर्माता राजा देवी सिंह जी थे। यहां के राजा उदय सिंह की याद में उनके भाई राजा देवी सिंह जी ने समाधि के रूप में बनवाया था।

5) श्री मां बड़ी बिजासन माता मंदिर बड़वानी: (श्रेणी – धार्मिक व प्राकृतिक)

बड़वानी जिले के सेंधवा शहर से 16 किलोमीटर दूर राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक 03 पर मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र की सीमा पर स्थित मां बड़ी बिजासन माता का मंदिर आस्था का बड़ा केंद्र है। शारदीय नवरात्रि की सप्तमी, अष्टमी व नवमी को लाखों की संख्या में श्रद्धालु मां के दर्शन के लिए आते हैं। पिंड स्वरूप में विराजित माताजी सतपुड़ा की सुरम्य वादियों में एक प्राकृतिक स्थल भी है। लगभग 150 वर्ष पुराने स्थल पर मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात राज्य से भक्त दर्शन करने आते हैं।

यह धार्मिक एवं प्राकृतिक रमणीय स्थल जिला मुख्यालय से 73 किलोमीटर की दूरी पर है। यहां बस, कार व बाइक द्वारा आसानी से पहुंचा जा सकता हैं।

6) शिव कुंज धाम आशाग्राम : (श्रेणी–धार्मिक व प्राकृतिक)

बड़वानी नगर के उत्तर दिशा में आशाग्राम ट्रस्ट की 35 एकड़ बंजर पहाड़ी भूमि पर एक ही दिन में 3000 को पौधों का रोपण कर षशिव कुंज के पर्यावरणीय पाठशालाष के नाम से विख्यात शिव कुंज धाम प्राकृतिक एवं धार्मिक पर्यटन स्थल है। यहां 55 फुट के विशाल पंचमुखी हनुमान जी, सैलानियों के लिए सनसेट एवं सनराइज प्वाइंट, पहाड़ी से मां नर्मदा के प्रत्यक्ष दर्शन स्थल, मुक्ताकाश मंच, बौद्धिक मंच, ओपन जिम एवं सुंदर गार्डन, मॉर्निंग ट्रैक, 1800 वर्ग फीट का योग साधना केंद्र, कैफेटेरिया, सेव द अर्थ स्टैचू , फूलों की घाटी (फ्लावर वैली) महा आदियोगी की (30 फीट) प्रतिमा, ओपन मंच राइजिंग, श्री राम प्रतिमा, वनदेवी प्रतिमा आदि दर्शनीय व रमणीय स्थल है।

शिव कुंज पर्यटन स्थल में पर्यावरणीय पाठशाला के माध्यम से जल संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण एवं ऊर्जा संरक्षण का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है।

7) तोरणमाल बड़वानी : (श्रेणी–प्राकृतिक)

तोरणमाल को एक छोटा और अनदेखा हिल स्टेशन माना जाता है। जो सतपुड़ा रेंज की बड़वानी पहाड़ियों द्वारा खूबसूरती से गिरा हुआ है। ऐसा माना जाता है की तोरणमाल का निर्माण उत्तर से दक्षिण की ओर एक धारा के कटने से हुआ था। उक्त प्राकृतिक स्थल मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र एवं गुजरात राज्य की सीमाओं से गिरा है। तोरणमाल को महाराष्ट्र राज्य का दूसरा सबसे ठंडा स्टेशन माना जाता है। गर्मियों के दौरान अपेक्षाकृत ठंडी जलवायु का अनुभव करवाने वाला हिल स्टेशन तोरणमाल सतपुड़ा पहाड़ियों में एक छोटा पठारी क्षेत्र लगभग 41 वर्ग किलोमीटर में स्थित है। इसका हरा भरा परिवेश और वन्य जीव अभ्यारण पर्यटकों को आकर्षित करता है। यह स्थान प्राकृतिक सुंदरता और शांति का एक आदर्श मिश्रण है।

तोरणमाल में सीता खाई, ईकोपॉइंट, खड़की पॉइंट (ट्रैकिंग क्षेत्र), गोरखनाथ मंदिर, लोटस लेक, मछिंद्रनाथ गुफा, आवाशबारी पॉइंट, तोरण देवी मंदिर (600 वर्ष पुराना माना जाता है) वन पार्क और औषधीय पौधे उद्यान आदि रमणीय स्थल है। यहां पर्यटको को ट्रैकिंग, वॉटरफॉल, रैपलिंग, नौका विहार, कैंपिंग, दर्शनीय स्थल, फोटोग्राफी आदि का लुप्त प्राप्त होता है।

तोरणमाल जिला मुख्यालय बड़वानी से 70 किलोमीटर की दूरी पर तथा राष्ट्रीय राजमार्ग सेंधवा से 101 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यहां स्वयं के वाहन द्वारा पहुंचा जा सकता है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

8) नांगलवाड़ी भिलट देव मंदिर : (श्रेणी – एडवेंचर, धार्मिक व प्राकृतिक)

बड़वानी जिले में स्थित नांगलवाड़ी मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र सीमा पर स्थित एक अत्यंत सुंदर एवं दर्शनीय स्थल है। यह सतपुड़ा हिल रेंज में स्थित है। पहाड़ी की चोटी पर एक बहुत प्रसिद्ध भिलट देव मंदिर पर्यटकों, तीर्थ यात्रियों के लिए मुख्य आकर्षण है। यहां नाग पंचमी पर प्रतिवर्ष मेले का आयोजन किया जाता है। जिसमें लाखों की संख्या में मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात के भक्त अपनी मनोकामना लेकर आते हैं। उक्त स्थल लगभग 2200 फीट की ऊंचाई पर स्थित है।

जिला मुख्यालय बड़वानी से नांगलवाड़ी 63 किलोमीटर की दूरी पर है। यहां बस, कार, बाइक से पहुंचा जा सकता है।

9) बंधान झरना : (श्रेणी – प्राकृतिक)

जिला मुख्यालय से 3 किलोमीटर दूर प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण सतपुड़ा के उत्तरी पाद में स्थित बंधान झरना स्थल एक प्राकृतिक झरना है। यहां वर्ष भर पानी का बहाव देखा जाता है। झरना स्थल पर ही भगवान शिव की बड़ी प्रतिमा एवं मां खोडियार मंदिर आकर्षण का केंद्र है, यहां की 2000 आबादी वाले गांव बंधान के लिए झरने का पानी पेयजल के साथ निस्तार के काम आता है। जिला मुख्यालय के नजदीक होने के कारण यहां आसानी से पहुंचा जा सकता है।

10) रामगढ़ का किला : (श्रेणी – ऐतिहासिक व प्राकृतिक)

जिला मुख्यालय से लगभग 65 किलोमीटर दूरी पर सतपुड़ा की पर्वत श्रृंखला में स्थित रामगढ़ का किला ऐतिहासिक एवं प्राकृतिक स्थल है।

बारिश के बाद के मौसम में इसकी खूबसूरती रोमांचित कर देने वाली होती है। ऊंचे पहाड़ पर जंगलों के रास्ते, बादलों से गिरा किला, जमीन पर छाई हरियाली, बेहद ही मनमोहक व रोमांचक होती है।

परमार शासको द्वारा बनवाया गया यह किला समुद्र तल से 1532 फीट ऊंचाई पर बना है जो करीब 1000 साल पुराना है। 8वीं से 11वीं शताब्दी के बाद बड़वानी के सिसोदिया शासकों ने किले का जीर्णोद्धार कराया था।

उक्त पर्यटन स्थलों के साथ–साथ कई और भी स्थल है जिनमें मुख्य रूप से:

- शहीद भीमा नायक सागर बांध, बड़वानी : (श्रेणी – प्राकृतिक एवं कृत्रिम)
- पत्थरी दरगाह शरीफ, पलसूद : (श्रेणी – धार्मिक)
- शिव मंदिर , बड़वानी : (श्रेणी – धार्मिक)
- भंवरगढ़ का किला, सेंधवा : (श्रेणी – ऐतिहासिक)
- राजराजेश्वर मंदिर, सेंधवा : (श्रेणी – धार्मिक)
- सांवरिया सेठ मंदिर, बड़वानी : (श्रेणी – धार्मिक)
- हनुमान टेकरी, बड़वानी : (श्रेणी – धार्मिक व प्राकृतिक)
- धोबडिया तालाब, बड़वानी : (श्रेणी– प्राकृतिक)
- सिंगाजी के जन्मस्थली खजूरी : (श्रेणी – धार्मिक)

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

पर्यटन स्थलों का विकास :

अध्ययन क्षेत्र में सिद्ध क्षेत्र चूलगिरी बावनगजा का राज्य शासन के द्वारा अच्छा विकास किया गया है।जिसमें सड़कों के साथ अन्य सुविधाएं भी उपलब्ध है। साथ ही बावनगजा रोड पर बड़वानी शहर से 5 किलोमीटर दूरी पर श्री पार्श्व गिरी जैन मंदिर भी बना है। जहां पर भी सड़क एवं उद्यान आदि का विकास कर पर्यटकों को आकर्षित किया जा रहा है।

बड़वानी के समीप नर्मदा नदी के तट पर एक धार्मिक स्थल राजघाट है जो कि वर्तमान में नर्मदा के बैक वॉटर से डूब प्रभावित है। इसके विकास की भी योजना शासन द्वारा बनाई गई है। साथ ही बड़वानी शहर में स्थित ऐतिहासिक स्थल तीर गोला का भी राज्य शासन द्वारा रखरखाव, स्वच्छता व पहुंच मार्ग का विकास किया गया है।

बड़वानी जिले के सेंधवा शहर के समीप बड़ी बिजासन माता मंदिर का भी प्रशासन के द्वारा अच्छा विकास एवं रखरखाव किया गया है। साथ ही बड़वानी शहर में शिवकुंज धाम आशा ग्राम का भी जिला प्रशासन, आशा ग्राम ट्रस्ट एवं जन सहयोग से विकास किया गया है। जहां पूरी शिव कुंज पहाड़ी पर पेड़ पौधों को रोपकर पर्यावरण संरक्षण का कार्य किया गया है।

इसके अलावा बड़वानी जिले के अन्य पर्यटन स्थलों तोरण माल, नांगलवाड़ी, बंधन झरना, रामगढ़ का किला आदि का राज्य प्रशासन, जिला प्रशासन द्वारा विकास एवं रखरखाव करके संस्कृति एवं पर्यावरण का संरक्षण किया गया है।

उपसंहार :

अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न पर्यटन स्थलों का सरकार एवं गैर सरकारी संस्थाओं के माध्यम से विकास का कार्य निरंतर प्रगति पर हैं। जिसके माध्यम से छोटे, मध्यम और बड़े पर्यटन क्षेत्रों का विकास किया जा रहा हैं। जिससे भविष्य में पर्यटन के क्षेत्र में देश और प्रदेश की संस्कृति को समृद्ध साली बनाया जा सकेगा एवं पर्यटन स्थल और पर्यावरण का संरक्षण भी किया जा सकेगा।

अध्ययन क्षेत्र के पर्यटन स्थलों पर जो असुविधाएं पाई गई, उक्त (लगभग) सभी समस्याएं देश के अधिकांश (मध्यम) स्थलों पर भी देखी जा सकती है। उक्त समस्याओं का उचित समय पर उचित समाधान पर्यटन उद्योग के विकास के लिए अति आवश्यक है। देश में पर्यटकों को आकर्षित करने की तकनीक, समस्याओं का समाधान करने की तकनीक तो उपलब्ध है, परंतु इन तकनीकों का सही समय पर प्रयोग नहीं हो पाता है। आवश्यकता इस बात की है कि पर्यटन के क्षेत्र में पर्यटकों को आकर्षित करना तथा समस्याओं को दूर करने हेतु ठोस कदम (समय रहते) उठाए जाएं, ताकि पर्यटन के विकास के साथ–साथ जीवन एवं पर्यावरण के साथ न्याय संगत कार्य हो।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. **डॉ. एस. एल. वरे** – मध्य प्रदेश में पर्यटन, कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल
2. **डॉ. शिव अनुराग पटेरवा** – मध्य प्रदेश अतीत और आज, मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल
3. हिस्ट्री एंड डेवलपमेंट प्रकाशन – भाटिया ए क
4. भारत की जनगणना 2011
5. http-//www-tourism-gov-in
6. http-// shodhganga inflinet ac-in
7. http-//hi-m-Wikipedia-org/Wiki/
8. http-//Barwani-nic-in

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर योगाभ्यास के प्रभाव का अध्ययन

प्रतिभा तोमर
शोधार्थिनी जीवाजी विश्वविद्यालय
ग्वालियर (म.प्र.)

Paper Rcevied date
05/01/2025
Paper date Publishing Date
14/01/2025
DOI
https://doi.org/10.5281/zenodo.14740096

IMPACT FACTOR
5.924

सारांश

यदि प्रतिदिन योगाभ्यास किया जाए तो मन शांत, स्थिर व एकाग्र रहता है। जब शरीर व मन शान्त व स्थिर रहता है तो मानसिक स्वास्थ्य में वृद्धि होती है। आधुनिक युग का विद्यार्थी तनावग्रस्त है अतः उसे योगाभ्यास की अधिक आवश्यकता है। उसे ऐसी दिनचर्या, जीवन चर्या एवं आचरण पद्धति की आवश्यकता है जो उसका चहुँमुखी विकास कर सके। योग ऐसी दिनचर्या, जीवनचर्या एवं आचरण पद्धति है जिसके द्वारा विद्यार्थी का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, भावनात्मक एवं आध्यात्मिक विकास संभव है। योग करना हर विद्यार्थी का परम् कर्तव्य है। योग एवं ध्यान के माध्यम से विद्यार्थी में अनुशासन पालन करने की भावना का विकास होता है एवं उसकी सोच में सकारात्मकता आती है। योग के माध्यम से शरीर, मन, चेतना एवं आत्मा को एकजुट कर सन्तुलन में लाया जा सकता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थिनी ने स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर योगाभ्यास के प्रभाव का अध्ययन कार्य किया। प्रस्तुत अध्ययन में सभी प्रयोज्य सामान्य से अधिक तनावग्रस्त एवं चिन्ता स्तर के थे। अधिकांश प्रयोज्य (विद्यार्थी) छोटी–छोटी बातों को लेकर तनावग्रस्त, चिन्तित एवं परेशान हो जाते थे। उन्हें विभिन्न प्रकार के भय एवं आशंका के कारण सिर में भारीपन रहता था तथा पढ़ने में मन नहीं लगता था, साथ ही नकारात्मक सोच के कारण परिवार एवं समाज में सामंजस्य स्थापित करने में कठिनाई होती थी।

नियमित रूप से तीन माह तक योगाभ्यास द्वारा उनका शारीरिक नाड़ी अवरोध दूर होकर प्रयोज्यों (विद्यार्थियों) का मन हल्का व हर्षित हुआ। प्रयोज्यों में योगाभ्यास से अपनी मानसिक स्थिति के प्रति जागरूकता एवं निर्णय लेने की शक्ति उत्पन्न हुई जिससे उनमें समस्याओं को सकारात्मक रूप से हल करने की प्रवृत्ति उत्पन्न हुई और तनाव एवं चिंता का निराकरण हुआ।

मुख्य बिन्दु : विद्यार्थी, योगाभ्यास, प्राणायाम, ध्यान, मानसिक स्वास्थ्य।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

प्रस्तावना

योग शब्द संस्कृत की युज् धातु एवं घञ् प्रत्यय से बना है जिसका अर्थ है जुड़ना, एक होना। योग एक आध्यात्मिक प्रक्रिया है जो शरीर, मन एवं आत्मा को जोड़ती है एवं हमारे दिमाग को शांत रखती है। योग शारीरिक एवं मानसिक दोनों रूप से अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखने में मदद करता है। योग से तनाव में राहत मिलती है एवं अच्छी नींद आती है, पाचन में वृद्धि होती है। यदि योग को अपनी दिनचर्या में शामिल करते है तो तनाव मुक्त जीवन जीकर शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है।

प्राचीन भारतीय दर्शन में योग को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है। आध्यात्मिक उन्नति, शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के लिए योग की आवश्यकता एवं महत्त्व को केवल हिन्दू धर्म में ही नहीं बल्कि सभी भारतीय धार्मिक सम्प्रदायों एवं दर्शनों द्वारा एकमत से स्वीकार किया है। वर्तमान समय में तो इस वैज्ञानिक युग में योग का और भी अधिक महत्त्व बढ़ गया है क्योंकि वर्तमान मनुष्य की व्यस्तता एवं व्याकुलता के कारण वह तनावग्रस्त, चिन्तित एवं रोगग्रस्त है जिसका निदान योग द्वारा ही संभव है।

योग प्राचीन भारत की अमूल्य धरोहर है। यह शरीर और मन की एकता का प्रतीक है। यह मनुष्य एवं प्रकृति के बीच सामंजस्य स्थापित करने में समर्थ है। वर्तमान समय में बढ़ती हुई शारीरिक एवं मानसिक अस्वस्थता का निवारण एक मात्र योग में ही निहित है। आज की ज्वलंत समस्या मानसिक रोगों की है जिसके कारण चिन्ता, तनाव, उच्च रक्तचाप आदि व्याधियों का जन्म होता है। इन व्याधियों से ग्रस्त मनुष्य को योग एवं ध्यान के द्वारा स्वस्थ किया जा सकता है।

मानसिक स्वास्थ्य

जब कोई भी व्यक्ति मानसिक व्याधि तनाव, चिंता, अवसाद आदि से मुक्त होता है एवं प्रसन्नचित्त रहता है तो वह मानसिक रूप से स्वस्थ कहलाता है और मनुष्य की इसी अवस्था को मानसिक स्वास्थ्य कहा जाता है। मानसिक स्वास्थ्य प्रत्येक बालक (व्यक्ति) का अपना प्राकृतिक एवं सामाजिक वातावरण होता है जिसमें वह रहता है एवं जीता है। जो बालक अपने सामाजिक वातावरण के अनुसार स्वयं को जितना सही रूप में ढाल लेता है वह मानसिक रूप से उतना ही स्वस्थ कहलाता है। मनोवैज्ञानिक कार्ल मेनिंगर के अनुसार, ''मानसिक स्वास्थ्य अधिकतम खुशी तथा प्रभावशीलता के साथ वातावरण एवं उसके प्रत्येक दूसरे व्यक्ति के साथ मानव समायोजन है, वह एक सन्तुलित मनोदशा, सतर्क बुद्धि, सामाजिक रूप से मान्य व्यवहार एवं खुश मिजाज बनाये रखने की क्षमता है।''

अध्ययन का औचित्य

वैज्ञानिक तथ्यों से यह स्पष्ट हो चुका है कि तन का प्रभाव मन पर एवं मन का प्रभाव तन पर पड़ता है। अतः विद्यार्थी के लिए जितना शारीरिक रूप से स्वस्थ रहना आवश्यक है उतना ही उसका मानसिक रूप से स्वस्थ रहना आवश्यक है। जिस प्रकार कमजोर जड़ वाला पेड़ आँधी–तूफान का मुकाबला करने में असमर्थ होता है अर्थात् अन्त में जमीन पर गिर जाता है उसी प्रकार शारीरिक या मानसिक रूप से अस्वस्थ विद्यार्थी

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

कोई बड़ी उपलब्धि प्राप्त नहीं कर सकता है। यदि विद्यार्थी को अपने जीवन में नई–नई ऊँचाइयों को छूना है तो उसे शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ होना आवश्यक है। अधिकतर विद्यार्थी शारीरिक स्वास्थ्य पर तो ध्यान देते हैं किन्तु मानसिक स्वास्थ्य के महत्व को वे नहीं समझते हैं जबकि मानसिक स्वास्थ्य का शारीरिक स्वास्थ्य से भी अधिक महत्त्व होता है, यही बात इस अध्ययन से स्पष्ट होती है। योगाभ्यास वह साधन है जिसके माध्यम से व्यक्ति शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ रह सकता है।

सम्बंधित साहित्य का अध्ययन

- **श्रीवास्तव, एस.के. (2000),** आपने ''योगाभ्यासी एवं गैर योगाभ्यासी छात्र छात्राओं के व्यक्तिगत जीवन का तुलनात्मक अध्ययन'' पर शोध कार्य किया। आपने अपने निष्कर्ष में पाया कि योगाभ्यास करने वाले छात्र–छात्राओं में लगनशीलता, नैतिकता, मानवता, सामाजिकता, शालीनता, आज्ञाकारिता एवं ओजस्वी शील गुण, गैर योगाभ्यासी छात्र–छात्राओं की अपेक्षा अधिक होते हैं।

- **पाण्डे, एन.सी. (2004),** आपने ''शारीरिक शिक्षा के छात्रों के योग की नियमितता व अनियमितता के कारणों का अध्ययन'' पर शोध कार्य किया। आपने अपने शोध निष्कर्ष में पाया कि नियमित योग करने के कारणों में मुख्यतः स्फूर्ति, मानसिक स्वास्थ्य, तनाव, शारीरिक स्वास्थ्य, नियंत्रण आदि बिन्दु उभरकर सामने आए।

- **संतोष, डी (2014),** आपने ''सेकेण्डरी स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं शैक्षिक उपलब्धि पर योगा पैकेज का प्रभाव'' पर शोध अध्ययन किया। आपने अपने शोध अध्ययन में पाया कि योग पैकेज से भावनात्मक बुद्धि के घटकों आत्मविश्वास, संवेग, आत्मनियंत्रण तथा आत्म जागरूकता में सकारात्मक रूप से वृद्धि होती है। इस प्रकार यह पाया गया कि योग पैकेज विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि के विकास में सहायक है।

- **सिंह, हरि (2015),** आपने ''शारीरिक स्वास्थ्य पर योग का प्रभाव एक अध्ययन'' पर शोध कार्य किया। आपने अपने शोध निष्कर्ष में पाया कि योग से शारीरिक स्वास्थ्य में सकारात्मक परिवर्तन होता है, तनाव में कमी आती है, श्वास रोकने की क्षमता में वृद्धि होती है तथा रक्त प्रभाव नियंत्रण में रहता है।

- **नरके, एच.जे. एवं दयानानी, एम. (2015),** आपने ''किशोरों के समायोजन पर योगाभ्यास का प्रभाव'' पर शोध अध्ययन किया। आपने अपने शोध निष्कर्ष में पाया कि योगाभ्यास से किशोरों के समायोजन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

- **कौर, सर्वजीत (2018),** आपने ''शारीरिक एवं मानसिक व्याधियों की चिकित्सा में संगीत एवं योग की भूमिका : सर्वेक्षण एवं प्रयोग'' पर शोध कार्य किया। आपने अपने शोध निष्कर्ष में पाया कि संगीत एवं योग

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

रोगी के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में नियमित अनुशासन, सकारात्मकता एवं क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने में सक्षम हैं। हालाँकि यह वैकल्पिक चिकित्सा है। संगीतज्ञ, योग गुरू, मनोवैज्ञानिक, चिकित्सक सभी की भूमिका अनिवार्य है।

समस्या कथन

किसी भी शोध में समस्या कथन का अत्यधिक महत्त्व होता है। समस्या कथन शोध का केवल शीर्षक ही नहीं होता है बल्कि यह एक सुस्पष्ट लक्ष्य केन्द्रित करने का प्रयास भी है। अतः शोधार्थिनी ने वर्तमान सामाजिक परिस्थिति को देखते हुए निम्न समस्या का चयन किया है–

''स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर योगाभ्यास के प्रभाव का अध्ययन''।

शोध का उद्देश्य

बिना उद्देश्य के कोई भी शोध कार्य नहीं हो सकता है। अतः शोध का सही परिणाम प्राप्त करने के लिए यह अति आवश्यक है कि शोध समस्या का उद्देश्य स्पष्ट हो। प्रस्तुत शोध के उद्देश्य निम्न हैं –

- प्रस्तुत शोध में स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना है।
- प्रस्तुत शोध में स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर योगाभ्यास के प्रभाव का अध्ययन करना है।

शोध की परिकल्पना

योगाभ्यास करने वाले स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं योगाभ्यास न करने वाले स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

परिसीमन

- प्रस्तुत शोध अध्ययन ग्वालियर नगर के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों तक ही सीमित है।
- अध्ययन हेतु ग्वालियर नगर के शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों का चयन किया गया।
- चयनित सभी विद्यार्थी प्रायः किशोर वर्ग के अर्थात् 16 वर्ष से 20 वर्ष तक की आयु के लिए गए।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के रूप में ग्वालियर शहर के स्नातक स्तर के 100 विद्यार्थियों का असंभाव्यता प्रतिचयन की आकस्मिक चयन विधि द्वारा चयन किया गया है।

विधि

प्रस्तुत शोध में असंभाव्यता प्रतिचयन की आकस्मिक प्रतिचयन विधि का प्रयोग कर 100 प्रयोज्यों का चयन किया गया। प्रयोज्यों को दो समूहों, प्रयोगात्मक समूह (योगाभ्यास करने वाले) एवं नियंत्रित समूह (योगाभ्यास न करने वाले) में विभाजित किया गया। मानसिक स्वास्थ्य मापने के लिए श्रीमती कमलेश शर्मा

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

द्वारा विकसित मानसिक स्वास्थ्य मापनी का प्रयोग किया गया। पूर्व–पश्चात् परीक्षण विधि द्वारा आँकड़ों का संग्रह किया गया।

सांख्यिकी विश्लेषण

सांख्यिकी विश्लेषण हेतु मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात ज्ञात किया गया।

कार्य योजना

प्रस्तुत शोध में प्रयोगात्मक समूह के प्रयोज्यों पर प्रतिदिन 3 माह तक सुबह 6:00 A.M. पर एक घण्टा नियमित रूप से निम्नलिखित योगाभ्यास कराया गया।

क्रमांक	योगाभ्यास	समय
1.	सूर्य नमस्कार	10 मिनिट
2.	आसन (सिद्धासन, बालासन, सर्वांगासन, मकरासन)	15 मिनिट
3.	प्राणायम (अनुलोम विलोम, उज्जायी)	15 मिनिट
4.	नादयोग	15 मिनिट
5.	शवासन (विश्राम)	05 मिनिट

परिकल्पना का विश्लेषण

योगाभ्यास करने वाले स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं योगाभ्यास न करने वाले विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

परिणाम सारणी

योगाभ्यास करने वाले एवं योगाभ्यास न करने वाले स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य से सम्बंधित परिणाम

स्मूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर	तालिका मान t	निष्कर्ष
योगाभ्यास करने वाले स्नातक स्तर के विद्यार्थी	50	72.98	16.03	9.76	0.05	1.98	सार्थक परिकल्पना अस्वीकृत
योगाभ्यास न करने वाले स्नातक स्तर के विद्यार्थी	50	59.63	8.53		0.01	2.63	सार्थक परिकल्पना अस्वीकृत

d.f. = $(N_1 -1) + (N_2 -1) = (50 -1) + (50 -1) = 98$

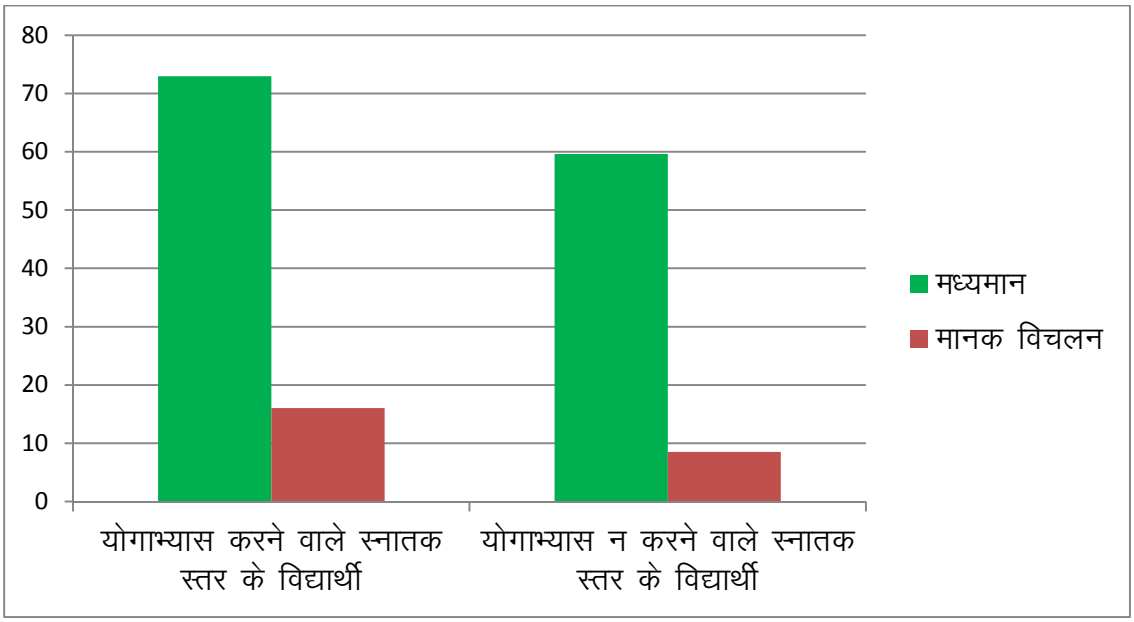

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

विश्लेषण

उपर्युक्त सारणी का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि योगाभ्यास करने वाले स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का मध्यमान 72.98 एवं मानक विचलन 16.03 है तथा योगाभ्यास न करने वाले स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का मध्यमान 59.63 है एवं मानक विचलन 8.53 है। तालिका मान t में 98 स्वातंत्रय (98 d.f.) पर सार्थकता के लिए t का मान 0.05 विश्वास स्तर पर 1.98 एवं 0.01 विश्वास स्तर पर 2.63 है जबकि गणना से प्राप्त C.R. (t) का मान 9.76 है जो कि दोनों विश्वास स्तरों पर मानक मानों से अधिक है अतः दोनों स्तरों पर मध्यमानों का अन्तर सार्थक है। अतः दोनों स्तरों पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है अर्थात् योगाभ्यास करने वाले स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं योगाभ्यास न करने वाले स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर है। चूँकि योगाभ्यास करने वाले विद्यार्थियों का मध्यमान अधिक है, अतएव योगाभ्यास करने वाले स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य, योगाभ्यास न करने वाले स्नातक स्तर के विद्यार्थियों से अच्छा है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त गणना के आधार पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है चूँकि योगाभ्यास करने वाले स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का मध्यमान अधिक है। अतः योगाभ्यास करने वाले स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य अधिक अच्छा है। निष्कर्ष में कहा जा सकता है कि योगाभ्यास का मानसिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। योगाभ्यास का विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ने के कारण उनकी कार्यक्षमता में वृद्धि होती है, तनाव कम होता है, मनोवैज्ञानिक एवं शारीरिक स्थिति में सुधार होने से विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता एवं शैक्षणिक उपलब्धि की वृद्धि होती है।

प्रस्तुत शोध–पत्र से प्राप्त निष्कर्ष से अध्ययन की निम्नलिखित उपायदेयता सामने आईं –

- योगाभ्यास के माध्यम से विद्यार्थियों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य का विकास किया जा सकता है।
- योगाभ्यास से विद्यार्थियों का तनाव व चिन्ता कम होती है।
- योगाभ्यास से विद्यार्थियो की एकाग्रता बढ़ती है जिससे स्मरण शक्ति की वृद्धि होती है।
- शोध अध्ययन से यह भी पता चला है कि योगाभ्यास से विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धि क्षमता में वृद्धि होती है जिससे उनकी कार्यक्षमता में भी वृद्धि होती है।

सुझाव

- विद्यार्थियों को प्रातः उठकर नियमित योगाभ्यास की आदत डालनी चाहिए।
- विद्यार्थियों को योग को अपने दैनिक जीवन का अंग बनाना चाहिए।
- विद्यार्थियों को योग गुरू द्वारा बताई गई योग सम्बंधी बातों को ध्यान पूर्वक सुनना चाहिए एवं उन्हें अपने जीवन में अपनाना चाहिए।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

- विद्यार्थियों को योग प्रशिक्षण शिविरों में बढ़–चढ़कर भाग लेना चाहिए।
- विद्यार्थियों को योग सम्बंधी पुस्तकों एवं पत्र–पत्रिकाओं का स्वाध्याय करना चाहिए।
- विद्यार्थियों को अपने मित्रों एवं आस–पड़ोस के लोगों को योग के लाभों से परिचित कराना चाहिए ताकि अन्य लोग भी योग का लाभ उठा सकें।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. ठाकुर, डॉ. जितेन्द्र कुमार (2017), योग द्वारा रोगों का उपचार, स्पोर्ट्स पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
2. प्रमाणिक, डॉ. तारक नाथ (2017), योग चिकित्सा, स्पोर्ट्स पाब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
3. डॉ. राजकुमार (2012), वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियाँ, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. ग्रोवर, डॉ. सत्यपाल (2016), योग और भोजन द्वारा रोगों का इलाज, वी एण्ड एस पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
5. गोपाल, डॉ. उषा (2010), प्राणायम तथा यौगिक व्यायाम, स्पोर्ट्स पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
6. चौबे, डॉ. सरयू प्रसाद (2006), शिक्षा मनोविज्ञान, अनु प्रकाशन, जयपुर।
7. अत्रिदेव, विद्यालंकार (1998), योग चिकित्सा, चौखम्बा संस्कृत–सीरीज, बनारस।
8. गोयनका, हरिकृष्ण दास (1995), योग दर्शन, गीता प्रेस, गोरखपुर।
9. शर्मा, मेहरादत्त (2011), प्राणायाम साधना एवं चिकित्सा, मनोज पब्लिकेशन्स, दिल्ली।
10. भाटिया, मनजीत सिंह (2004), मनोरोग गलत धारणाएँ और सही पहलू, बसन्त कुँज, नई दिल्ली।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Digital Marketing in India: Balancing Data Privacy with Innovation and Cybersecurity

[1] Dr. Ajay Kumar Garg

[1] Assistant Professor
PGDAV College (Evening)
University of Delhi

[2] Ms. Shikha Kuchhal

[2] Research Scholar
Department of Electrical Engineering
Jamia Millia Islamia, New Delhi

Paper Rcevied date

05/01/2025

Paper date Publishing Date

14/01/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.14851529

IMPACT FACTOR 5.924

ABSTRACT

The rapid expansion of digital marketing has introduced new challenges in balancing innovation with consumer data protection. The vast collection of personal data for targeted marketing poses privacy risks, making data protection and cybersecurity crucial in modern marketing strategies. In India, where e-commerce is flourishing and digital engagement is on the rise, concerns about data privacy and consumer protection are at the forefront of both regulatory and business practices. This paper explores the intersection of data privacy, cybersecurity, and digital marketing, focusing on the Indian market. It examines key regulations, such as the Digital Personal Data Protection Act (DPDP Act), consumer views on data privacy, and the importance of cybersecurity in maintaining trust. Through data analysis and case studies of Indian companies, we provide insights into balancing data-driven marketing innovation with robust consumer protection frameworks.

Keywords: Data Privacy, Consumer Protection, Digital Marketing, Cybersecurity, Innovation, Personal Data, Indian E-commerce

1. INTRODUCTION

The rise of digital marketing has revolutionized how businesses engage with consumers, enabling highly personalized and targeted marketing strategies. However, this innovation comes with a cost—consumer data privacy. As businesses utilize large amounts of personal data to create tailored marketing experiences, the risks of data misuse and unauthorized access have become more significant. This shift in the marketing landscape necessitates a balance between innovation and strong data protection measures. In India, where the e-commerce market is booming, ensuring

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

consumer protection while leveraging data-driven marketing practices has become a significant concern.

Consumers in India are increasingly aware of the risks associated with sharing personal information online. With the rise of data breaches and misuse of consumer data in various sectors such as e-commerce, banking, and social media, the importance of data privacy has gained considerable attention. The Indian government has introduced the Digital Personal Data Protection Act, 2023 (DPDP Act), to address these concerns and provide a regulatory framework for safeguarding consumer data. While this act aims to offer enhanced protection, there remains a gap in consumer awareness regarding their rights and businesses' responsibilities.

As digital marketing evolves in India, businesses must innovate while ensuring consumer privacy is respected and protected. Cybersecurity plays a crucial role in this dynamic—without strong security measures, the risk of data breaches and loss of consumer trust increases. This paper

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

examines the intersection of data privacy, consumer protection, and digital marketing, focusing on the Indian context. We explore how companies can balance personalized marketing with robust data protection strategies and how regulations like the DPDP Act can shape future marketing practices in India.

2. LITERATURE REVIEW

The literature on data privacy and cybersecurity in digital marketing has gained significant attention in recent years, particularly with the increasing use of data for personalized marketing. Global regulations, such as the General Data Protection Regulation (GDPR) in Europe and the California Consumer Privacy Act (CCPA) in the US, have influenced how companies collect and process personal data. India follows suit with the introduction of the DPDP Act, expected to profoundly impact businesses' handling of consumer data.

Data Privacy Concerns in India

Indian consumers are becoming more aware of privacy concerns as their digital footprint grows. A study by the Indian Internet and Mobile Association (IAMAI) found that 60% of Indian internet users are concerned about the safety of their personal data online (IAMAI, 2020). This concern is driven by incidents of data breaches and fears of data misuse in online shopping, social media, and financial transactions.

The Role of Cybersecurity in Digital Marketing

Cybersecurity is a critical element of consumer data protection. The rising number of cyberattacks targeting e-commerce and fintech platforms in India highlights the need for businesses to prioritize security. Cybersecurity practices such as encryption, multi-factor authentication, and secure payment gateways are essential for protecting sensitive consumer data.

Regulatory Framework in India

India's first comprehensive data protection law, the Personal Data Protection Bill (PDPB) 2019, aims to give consumers greater control over their personal data while holding businesses accountable for data breaches. The bill outlines various provisions on data collection, consent, and the right to be forgotten, significantly impacting digital marketing practices.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

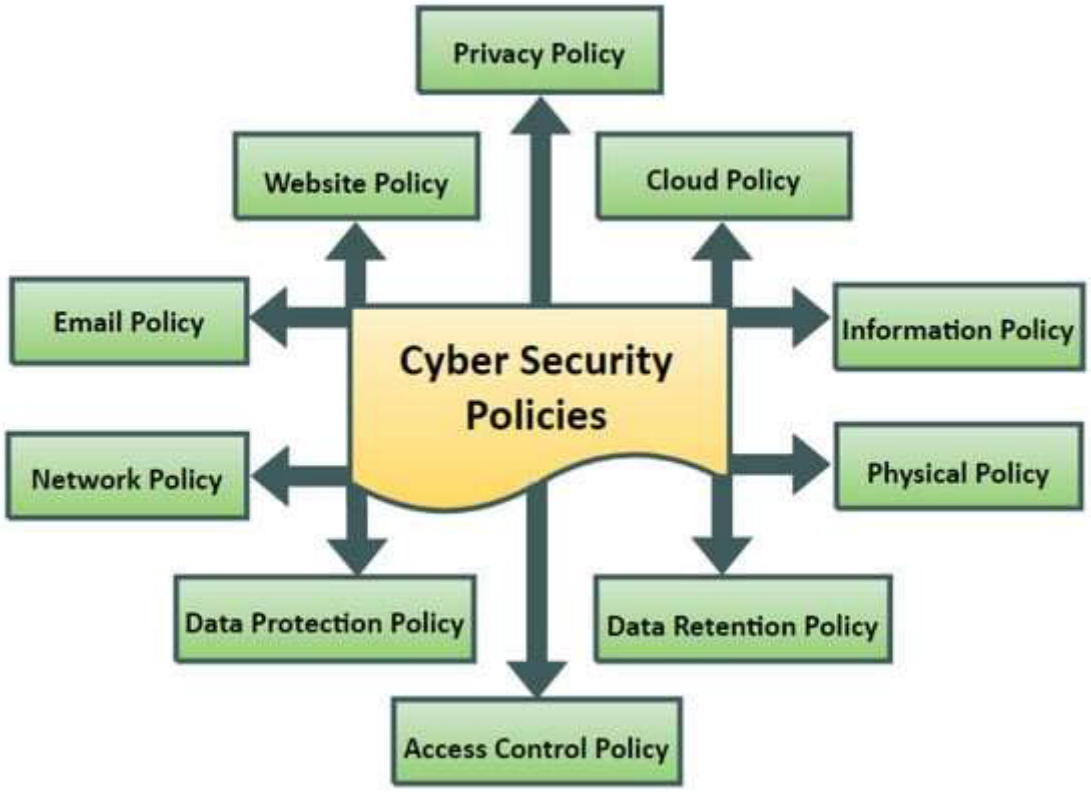

3. RESEARCH METHODOLOGY

This research adopts a mixed-methods approach, combining quantitative data analysis through surveys with qualitative insights from case studies of Indian companies. The methodology is divided into two primary components:

1. **Survey of Indian Consumers:** A survey was conducted among 500 digital consumers across India, focusing on their awareness of data privacy concerns, trust in businesses, and willingness to share personal information for targeted marketing.
2. **Case Studies of Indian E-commerce and Marketing Firms:** We analyzed three case studies of major Indian e-commerce companies, examining how they handle data privacy and cybersecurity in their marketing strategies. The case studies focus on implementing privacy measures, consumer trust-building strategies, and compliance with data protection laws.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Data Analysis: Survey Data

The survey data was collected using Google Forms and distributed to a diverse group of 500 consumers across various regions of India. The survey focused on the following areas: • Consumer Concerns About Data Privacy: Questions about how safe consumers feel while sharing personal information online, whether they are aware of data privacy laws, and their concerns regarding data misuse. • Consumer Trust in Businesses: Measuring trust levels based on businesses' transparency, data protection measures, and compliance with privacy laws. • Willingness to Share Data: Understanding the factors that influence consumers' decision to share personal data for targeted marketing, such as assurances of data protection.

Python Code for Data Analysis

The data analysis was performed using Python and the pandas library. The code below demonstrates how we analyzed the frequency of concerns related to data privacy:

```
python

import pandas as pd

import matplotlib.pyplot as plt


# Load survey data

survey_data = pd.read_csv('survey_data.csv')


# Display basic statistics

print(survey_data.describe())


# Frequency distribution of data privacy concerns

concerns = survey_data['Privacy_Concern'].value_counts()

print(concerns)


# Bar plot showing the frequency of data privacy concerns
```

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

```
concerns.plot(kind='bar', color='blue', title='Consumer Concerns About Data Privacy')
plt.xlabel('Concern Level')
plt.ylabel('Frequency')
plt.show()

# Pie chart showing awareness of GDPR and CCPA
awareness = survey_data['Awareness_of_GDPR'].value_counts()
awareness.plot(kind='pie', autopct='%1.1f%%', startangle=90, title='Awareness of GDPR')
plt.ylabel('')
plt.show()
```

I hope this helps in achieving your goal of reducing plagiarism. Let me know if there's anything else you need!

4. RESULTS AND DATA INTERPRETATION:

- **Data Privacy Concerns:** 75% of respondents expressed significant concern about their data being used for targeted marketing. This reflects global trends showing an increase in concern about data misuse.
- **Awareness of Data Protection Laws:** Only 40% of respondents were aware of India's Digital Personal Data Protection Act (DPDP Act), highlighting a significant gap in consumer education regarding their data rights.
- **Willingness to Share Data:** 60% of consumers indicated they would be more willing to share personal information if companies could assure them of robust data protection measures, including encryption and transparent data policies.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Interpretation:

The survey results demonstrate that Indian consumers are highly concerned about data privacy, with 75% expressing anxiety over the use of their personal data for targeted marketing. This finding underscores the growing awareness of privacy risks in the digital age, where consumers are increasingly cautious about how their data is collected and used. The main concerns revolve around unauthorized data sharing and the potential for identity theft or misuse of sensitive information.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Interestingly, while the majority of consumers are aware of the risks, 60% of respondents were unaware of India's data protection laws, such as the Digital Personal Data Protection Act, 2023 (DPDP Act). This gap in awareness highlights the need for more consumer education about data rights and privacy protections, which could help mitigate concerns and build trust in digital services.

Furthermore, 60% of respondents indicated a willingness to share their data if businesses could guarantee robust data protection measures. This suggests that despite concerns, consumers are open to data sharing when companies demonstrate clear and transparent data privacy practices. Businesses that prioritize cybersecurity and clearly communicate their commitment to data protection may have the opportunity to foster stronger consumer relationships and improve the effectiveness of their digital marketing strategies.

5. DISCUSSION:

This study reinforces the idea that businesses in India must innovate within the confines of robust data protection regulations. As consumer concerns about data privacy grow, companies that fail to invest in cybersecurity or ignore privacy regulations risk losing consumer trust, which can directly affect their digital marketing strategies. India's proposed Personal Data Protection Bill plays a pivotal role in shaping how businesses must approach consumer data in the coming years. By adhering to these regulations and prioritizing consumer privacy, businesses can create a secure and trusted digital marketing environment.

6. CONCLUSION:

In conclusion, the growing concerns over data privacy in India highlight the need for businesses to strike a balance between digital marketing innovation and consumer protection. As our findings indicate, while Indian consumers are eager for personalized experiences, they are also increasingly aware of the risks associated with sharing personal data. The lack of awareness about data *protection regulations such as the Digital Personal Data Protection Act, 2023 (DPDP Act) emphasizes the need for better consumer education on their rights and the safeguards in place to protect their information.

Businesses operating in India must prioritize data privacy and cybersecurity in their marketing strategies to foster trust and long-term consumer relationships. This includes not only adhering to regulatory requirements but also adopting transparent data protection practices that reassure

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

consumers. The willingness of consumers to share data when proper protections are in place underscores an opportunity for businesses to innovate without compromising privacy.

Ultimately, the future of digital marketing in India hinges on companies' ability to integrate robust cybersecurity measures while respecting consumer privacy. By aligning marketing efforts with data protection principles, businesses can create a secure and trustworthy environment for consumers, enhancing both the consumer experience and the effectiveness of marketing strategies.

7. REFERENCES:

1. Indian Internet and Mobile Association (IAMAI). (2020). "Digital Consumer Trends in India 2020."
2. Personal Data Protection Bill, 2019. Ministry of Electronics and Information Technology, Government of India.
3. Kumar, A., & Agarwal, S. (2020). "Impact of GDPR on Indian Businesses and Digital Marketing." Indian Journal of Digital Marketing, 4(1), 12-20.
4. Singh, R. (2024). The Future of E-commerce and Consumer Data Protection in India. Journal of E-commerce and Technology, 10(4), 85-100.
5. Kumar, A., & Agarwal, S. (2024). Impact of GDPR on Indian Businesses and Digital Marketing. Indian Journal of Digital Marketing, 4(1), 12-20.
6. Garg, R. (2024). Cybersecurity in India: Protecting Consumer Data in the Digital Age. Cybersecurity Review, 8(3), 233-245.
7. Chaudhary, M., & Sharma, N. (2023). The Role of Data Protection Laws in Indian Digital Marketing. Journal of Marketing & Privacy Law, 14(2), 45-62.